सच्चा दीन

(लड़कों और लड़कियों के लिए दीनी तालीम का सेट)

भाग-1

(संशोधित संस्करण)

अफ़ज़ल हुसैन
एम॰ए॰, एल॰टी॰

पुनरीक्षण
पाठ्य पुस्तक-लेखन एवं सम्पादन-समिति

विषय-सूची

ा?	कहाँ?	क्या?	कहाँ?
कुछ बातें नए संस्करण के बारे में	4	15.प्यारे नबी (सल्ल॰)	49
भूमिका	5	16.प्यारे नबी(सल्ल.) के प्यारे साथी(रज़ि.)	53
अल्लाह (हम्द)	7	17.अच्छे बच्चे	56
हमारा माबूद	8	18.नबियों के हालात	60
प्यारे नबी (सल्ल॰) (नात)	10	(i) हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम)	60
अल्लाह के रसूल	11	(ii) हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम)	65
इस्लाम	13	(iii) हज़रत इबराहीम (अलैहिस्सलाम)	70
कलिमा	16	19.क़ुरआन मजीद	76
जन्नत और जहन्नम	20	20.हदीस शरीफ़	81
इबादत	24	21.अदब और सलीक़े की बातें	85
नन्हा नमाज़ी (कविता)	27	22.मुस्लिम बच्चा (कविता)	89
नमाज़ और उसके फ़ायदे	29	23.अच्छी आदतें	91
नमाज़ के औक़ात और अज़ान	32	24.क़ुरआन मजीद पढ़ने के क़ायदे	94
वुज़ू का तरीक़ा	37	25.नमाज़ के अज़कार और दुआएँ	106
हम नमाज़ कैसे पढ़ते हैं?-1	39	26.दुआ (कविता)	112
हम नमाज़ कैसे पढ़ते हैं?-2	44		

कुछ बातें नए संस्करण के बारे में

'सच्चा दीन' इस्लामी-शिक्षाओं (इस्लामियात) पर मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिश द्वारा प्रकाशित एक अत्यन्त उपयोगी और लोकप्रिय सेट है, जो कई भाषाओं में छप चु है। बहुत दिनों से इस बात की ज़रूरत महसूस की जा रही थी कि इसमें छात्र-छात्रा के लिए ज़रूरी अभ्यासों को भी शामिल किया जाए। आजकल पाठ्य पुस्तकों में हर प के बाद पर्याप्त अभ्यास दिए जाते हैं, ताकि छात्र-छात्राओं को पाठ्य सामग्री अच्छी त समझ में आ जाए। एक ज़रूरत यह भी महसूस की जा रही थी कि छात्र-छात्राओं अ अध्यापकों की आसानी के लिए कठिन शब्दों के अर्थ भी किताब में दे दिए जाएँ। इ लिए पुनरीक्षण के दौरान इस बात का ख़ास ख़याल रखा गया है।

जहाँ ज़रूरत महसूस की गई वहाँ कुछ चीज़ें घटाई-बढ़ाई भी गई हैं, जिससे कित की उपयोगिता और अधिक बढ़ गई है।

पुनरीक्षण और अभ्यासों की तैयारी के काम में आदरणीय श्री सैयद शाह हुसैन ने ने विशेष दिलचस्पी ली। इसके अतिरिक्त विभाग के साथी सर्वश्री अबुल मुर्जा 'ज़ाहिद', मुहम्मद जावेद इक़बाल, मिर्ज़ा निहाल हबीब बेग और शफ़ीक़ आलम नदवी भी सहयोग किया। भाई मुहम्मद अली इस्लाही साहब और डॉक्टर ताबिश मेहदी सा के मशविरे भी इसमें शामिल रहे। जनाब मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही साहब निगरानी में संशोधित उर्दू संस्करण के अनुसार हिन्दी संस्करण के संशोधन अ पुनरीक्षण में मुहम्मद इलियास हुसैन का योगदान रहा और सैयद ख़ालिद निज़ामी सा के मशविरे शामिल रहे। इन सज्जनों के अलावा जिन महानुभावों ने भी किताब को चरण तक पहुँचाने में सहयोग दिया, हम उन सबके शुक्रगुज़ार हैं। अल्लाह तआला स सज्जनों को अच्छा बदला प्रदान करे।

किताब को बेहतर से बेहतर बनाने के लिए शिक्षकों, अभिभावकों और विद्वानों बहुमूल्य विचारों और सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

07-12-2009

मुहम्मद अशफ़ाक़ अहमद
निगराँ (निरीक्षक)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

'अल्लाह के नाम से जो बेइन्तिहा मेहरबान और रहम फ़रमानेवाला है।'

भूमिका

मुसलमान बच्चों के लिए इस्लामियात पर एक ऐसे सेट की ज़रूरत बहुत दिनों से सूस हो रही थी, जिसकी मदद से आरंभिक कक्षाओं के बच्चों को कम से कम समय अक़ायद, इबादात, सीरतुन्नबी, अंबिया और सुलहा की सीरतें, सामाजिक तौर-तरीक़े, ख़्लाक़ व आदात वग़ैरह के बारे में ज़रूरी मालूमात दी जा सकें और विषय-सामग्री का र बढ़ाए बिना आसान ज़बान में और बच्चों की समझ के मुताबिक़ दीन (इस्लाम धर्म) सादा, मगर ठीक-ठीक नक़्शा उनके दिमाग़ में बिठाया जा सके।

पिछले दस-बारह साल से कोर्स की किताबों के ज़रीए से एक ही अक़ीदे और धर्म तालीम और मुशरिकाना अक़ायद और ग़ैर इस्लामी बातों के प्रचार-प्रसार ने इस ज़रत को और ज़्यादा बढ़ा दिया। यह सेट असल में इसी ज़रूरत को पूरा करने के लिए ार किया गया है।

। सेट की विशेषताएँ :

ज़बान निहायत सादा, आसान और बयान करने का ढंग बच्चों की समझ के मुताबिक़ है।

बच्चों के स्वभाव और उनकी दिलचस्पियों का पूरा ध्यान रखा गया है।

हर किताब में दीन का पूरा ख़ाका पेश करने की कोशिश की गई है और दीन के हर पहलू से मुताल्लिक़ सिलसिलेवार ज़रूरी मालूमात दी गई हैं।

दीन का पूरा ख़ाका देने की कोशिश के बावजूद बहुत कम जगह में सिर्फ़ हल्की-फुल्की मालूमात देने को काफ़ी समझा गया है, ताकि बच्चे आसानी से कम से कम समय में दीन से वाक़िफ़ हो जाएँ।

5. मुख़्तलिफ़ फ़िक़्ही मसलकों के आलिमों के मशविरे और नज़रसानी के बाद प्रकाशित किया जा रहा है, ताकि हर मसलक के बच्चे इससे फ़ायदा उठा स
6. जहाँ तक हो सका है छोटे-मोटे मतभेदों को नज़र-अन्दाज़ करके बुनियादी ऐसी बातें पेश की गई हैं जिनपर सब सहमत हैं, ताकि बच्चों के दिमाग़ में उल न पैदा हो। अध्यापक ज़रूरत के तहत बच्चों के मसलक की रहनुमाई कर दे
7. मुशरिकाना अक़ीदे और ग़ैर इस्लामी बातें जो कोर्स की किताबों और स्कूलों वातावरण का ज़रूरी अंग बनते जा रहे हैं, उनके सिलसिले में हक़ीक़ी बातें बत की कोशिश की गई है, ताकि बच्चों का दिमाग़ उनके बुरे प्रभावों से बचा रहे

इस सेट को ज़्यादा फ़ायदेमन्द बनाने के लिए तमाम मशविरे शुक्रिये के साथ क़ किए जाएँगे। ख़ुदा करे हमारी यह छोटी-सी कोशिश नई नस्ल के लिए फ़ायदेम साबित हो।

वमा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाह।
(तौफ़ीक़ अल्लाह ही के हाथ में है।)

अफ़ज़ल हु

रामपुर, अक्तूबर 1961

1

अल्लाह

तूने यह संसार बनाया ख़ूब बनाया, ख़ूब सजाया
हरा-भरा फिर फ़र्श बिछाया फ़र्श बिछाकर, हमें बसाया
तेरे आगे सर को झुकाएँ
तुझको ही माबूद बनाएँ।

चिड़ियों को चहकाया तूने फूलों को महकाया तूने
सूरज को चमकाया तूने तारों को दमकाया तूने
मालिक! हम तेरे गुण गाएँ
तुझको ही माबूद बनाएँ।

ठंडी हवा चलाता है तू पानी भी बरसाता है तू
पौधे-पेड़ उगाता है तू फल और फूल लगाता है तू
तू दे तो सब रोज़ी पाएँ
तुझको ही माबूद बनाएँ।

—सेवक

कुछ और काम

इस कविता को याद करो और गाकर सुनाओ।

2

हमारा माबूद

माबूद (उपास्य) वह है, जिसकी इबादत या बन्दगी की जाए। ह सबका माबूद अकेला अल्लाह है। उसी ने हम सबको पैदा किया। उसी आसमान और ज़मीन बनाए हैं। वही हवा चलाता है। वही पानी बरसात है। वही पेड़-पौधे उगाता है। वही अनाज और फल पैदा करता है। वा खिलाता-पिलाता है। वही मारता-जिलाता है। वही सारे संसार का मालि और हाकिम है। सब उसके बन्दे और ग़ुलाम हैं। जो लोग अल्लाह व छोड़कर किसी और की पूजा करते हैं, वे सीधी-सच्ची राह से भटक गए हैं

अल्लाह के हुक्म के बिना न तो कोई हमें नफ़ा-नुक़सान पहुँचा सकत है और न हमारे किसी काम आ सकता है। इसी लिए हम अल्लाह के सिव न तो किसी और को अपना माबूद मानते हैं और न किसी और के साम अपना सिर झुकाते हैं। हमें जो कुछ माँगना होता है, अपने अल्लाह माँगते हैं। हम ख़ूब जानते हैं कि अल्लाह के सिवा सब मजबूर औ बेबस हैं। जिसके पास जो कुछ भी है, अल्लाह ही का दिया हुआ है जब तक वह चाहता है लोग उसी की दी हुई चीज़ों से फ़ायदा उठाते और दूसरों को फ़ायदा पहुँचाते हैं। बड़े-छोटे, अमीर-ग़रीब सब उसके मोहताज हैं।

ऐ अल्लाह! हम तेरी ही इबादत करते हैं।

और तुझ ही से मदद माँगते हैं।

ऐ अल्लाह! तू ही हमारा माबूद है।

शब्दार्थ और टिप्पणी

इबादत	=	उपासना
हाकिम	=	हुक्म देनेवाला, शासक
नफ़ा-नुक़सान	=	लाभ-हानि
बेबस	=	कमज़ोर
मोहताज	=	ज़रूरतमन्द

अभ्यास

) उत्तर दो :

1. माबूद किसे कहते हैं?
2. सिर्फ़ अल्लाह ही क्यों हमारा माबूद है?
3. अल्लाह तआला ने हमें क्या-क्या दिया है?
4. सारे संसार का मालिक और हाकिम कौन है?

) ख़ाली जगहों को भरो :

1. जो लोग अल्लाह को छोड़कर किसी और की पूजा करते हैं, वे सीधी-सच्ची राह से.....गए हैं।
2. अल्लाह के.....के बिना न तो कोई हमें नफ़ा-नुक़सान पहुँचा सकता है और न हमारे किसी काम आ सकता है।
3. हमें जो कुछ माँगना होता है, अपने अल्लाह से.....हैं।
4. बड़े-छोटे, अमीर-ग़रीब सब उसके.....हैं।

3

प्यारे नबी (सल्ल॰)

अहमद प्यारे नबी हमारे
अब्दुल्लाह के राज दुलारे
बनकर आए रहमते-आलम

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

चाँद अरब के रहबर सबके
लीजे उनका नाम अदब से
आँ हज़रत हैं बड़े मुकर्रम

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

दीन सिखाया नेक बनाया
ज़ुल्म मिटाया एक बनाया
हो गया बातिल दरहम बरहम

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

या रब! हमको फ़िक्र यही हो
सब बन जाएँ उनके पैरो
सिर्फ़ वही हैं सरवरे-आलम

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

–सेवक

कुछ और काम

इस नज़्म को ज़बानी याद करो और अपने साथियों के साथ मिलकर प

अल्लाह के रसूल

अल्लाह ने सबको पैदा किया, वही सबका ख़ालिक़ है, वही सबको ब्रलाता-पिलाता है। वही सबका मालिक और हाकिम भी है।

हम अल्लाह के बन्दे और गुलाम हैं। हम उसकी बन्दगी करते और सकी मर्ज़ी पर चलते हैं। अल्लाह की मर्ज़ी क्या है? वह क्या पसन्द और या नापसन्द करता है? उसकी बन्दगी कैसे की जाए? ये सब बताने के ाए उसने अपने रसूल भेजे। रसूल को पैग़म्बर और नबी भी कहते हैं। सारे पूल इनसान और अल्लाह के बन्दे थे। सच्चे और गुनाहों से पाक थे। ल्लाह की बातें बन्दों तक ठीक-ठीक पहुँचाते थे। प्यारे नबी हज़रत हम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के आख़िरी रसूल हैं। आपके ाद अब कोई दूसरा नबी नहीं आएगा। आप दुनियावालों को अल्लाह की र्ज़ी बताने आए थे। आपने हमें अल्लाह का पैग़ाम सुनाया, अल्लाह के क्म पर चलकर दिखाया। जीवन बिताने का ठीक-ठीक तरीक़ा बताया।

ज़िन्दगी बसर करने का जो तरीक़ा आप (सल्ल॰) ने बताया है, उसी सबकी नजात है। आप ही के बताए हुए रास्ते पर चलकर लोग अल्लाह ो खुश कर सकते हैं। यही सीधा और सच्चा रास्ता है। बाक़ी सब रास्ते लत और भटकानेवाले हैं।

हम सिर्फ़ प्यारे नबी के रास्ते पर चलेंगे। सारे संसार को उसी रास्ते ी तरफ़ बुलाएँगे। इसी में सबकी भलाई है।

अभ्यास

(क) उत्तर दो :

1. अल्लाह ही सबका मालिक और हाकिम क्यों है?
2. अल्लाह तआला ने नबी और रसूल किस लिए भेजे?
3. लोग अल्लाह को कैसे ख़ुश कर सकते हैं?
4. सबसे आख़िरी नबी और रसूल कौन हैं?
5. प्यारे नबी का नाम आते ही क्या करना चाहिए?

2. ख़ाली जगहों को भरो :

1. हम अल्लाह के बन्दे और.....हैं।
2. रसूल को पैग़म्बर और..... भी कहते हैं।
3. नबी और रसूल सब इनसान और अल्लाह के..... थे।
4. ज़िन्दगी बसर करने का जो तरीक़ा प्यारे नबी (सल्ल॰) ने बताया उसी में सबकी.....है।

इस्लाम

अल्लाह का शुक्र है, हम मुसलमान हैं। हमारा 'दीन' (धर्म) इस्लाम है। लाम ही सच्चा दीन है। इस्लाम के माननेवाले मुस्लिम होते हैं। मुस्लिम ल्लाह के हुक्म पर चलनेवाले को कहते हैं। हम मुस्लिम हैं। इसलिए हम ल्लाह के हुक्म पर चलेंगे।

हमारा अल्लाह बहुत अच्छा है। सारी अच्छाइयाँ उसी के अन्दर हैं। ो सिर्फ़ अच्छी और सच्ची बातें पसन्द हैं। उसने अच्छी बातों का हुक्म या है, बुरी बातों से रोका है। हम उसका कहा मानेंगे। हम बहुत अच्छे ार सच्चे बन जाएँगे। फिर तो अल्लाह हमें बहुत ज़्यादा चाहने लगेगा और से अल्लाह चाहने लगे, उसे भला कौन नहीं चाहेगा? फिर तो हमसे सब ार करने लगेंगे।

कुछ नादान ऐसे भी हैं जो अल्लाह को नहीं मानते। उसकी बताई ई अच्छी और सच्ची बातों का इनकार करते हैं। वे काफ़िर होते । जो अल्लाह को नहीं मानता वह कभी अच्छा और सच्चा नहीं हो कता। इसलिए अल्लाह उसको बहुत नापसन्द करता है। उससे बहुत राज़ होता है। और जिससे अल्लाह नाराज़ हो, भला उसे सज़ा से कौन वा सकता है?

ऐ अल्लाह! हमें अपने हुक्मों पर चला। हमें बुरी बातों से बचा। हमें च्छा और सच्चा बना दे। हमें सीधी राह पर चला। हमें अपनी और सबकी ाँखों का तारा बना दे। आमीन!

शब्दार्थ और टिप्पणी

नादान	=	नासमझ, न जाननेवाला
काफ़िर	=	इनकार करनेवाला
आँखों का तारा	=	प्यारा, पसन्दीदा, प्रिय

अभ्यास

(क) उत्तर दो :

1. कौन-सा दीन सच्चा है?
2. अल्लाह को कौन-सी बातें पसन्द हैं?
3. मुस्लिम किसे कहते हैं?
4. काफ़िर किसे कहते हैं?
5. हमारी दुआ क्या है?

(ख) नीचे कुछ बातें लिखी हैं। जो मुस्लिम के बारे में है उसके सामने (मु) और जो बात काफ़िर के बारे में है उसके सामने (का) लिखो।

1. अल्लाह के ताबेदार ( )
2. नादान ( )
3. अल्लाह का कहा न माननेवाला ( )
4. अच्छे और सच्चे ( )
5. अल्लाह को नापसन्द ( )
6. अल्लाह के पसन्दीदा ( )
7. सज़ा पानेवाले ( )
8. इस्लाम के माननेवाले ( )
9. अच्छी और सच्ची बातों का इनकार करनेवाले ( )

ख़ाली जगहों को भरो :

1. अल्लाह का शुक्र है, हम.....हैं।
2. हमारा दीन.....है।
3. अल्लाह ने.....बातों का हुक्म दिया।
4. अल्लाह ने.....बातों से रोका है।
5. ऐ अल्लाह! हमें अपने.....पर चला।

6

कलिमा

दीन इस्लाम की पहली बात सब बातों से अच्छी बात

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

यही हमारा कलिमा है। इसका मतलब है :

माबूद सिर्फ़ अल्लाह है, कोई और इबादत के लायक़ नहीं। हज़ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं।

इसी पाक कलिमे को पढ़कर लोग मुसलमान होते हैं। इस सच्ची ब को दिल से मानना और ज़बान से कहना ज़रूरी है। इसी लिए तो पैदा ह ही हमारे कानों में यह सच्ची बात फूँक दी गई थी। रोज़ाना पाँच बार मस्जिद से ये सच्चे बोल अज़ानों में पुकार-पुकारकर सुनाए जाते हैं। हम इ कलिमे को दिल से मानते हैं और ज़बान से भी अदा करते हैं।

हम मुसलमानों का तो यही ईमान है कि बन्दगी सिर्फ़ अल्लाह होनी चाहिए। अल्लाह को छोड़कर किसी और की इबादत की बात तो मुसलमान सोच भी नहीं सकते। जो मुसलमान नहीं हैं, उनमें का भी क समझदार आदमी आख़िर इस सीधी-सच्ची बात का इनकार किस तरह सकता है। ज़रा सोचिए तो! पैदा अल्लाह ने किया, खाने-पीने का स सामान वह देता है, मारना-जिलाना उसके हाथ में है, हवा उसके हुक्म चलती है, पानी वह बरसाता है, पेड़-पौधे उसके उगाए उगते हैं, फल-पू

ाके लगाए लगते हैं—कोई काम भी तो उसके हुक्म के बिना नहीं होता ार न किसी काम में कोई उसका साझी है। फिर उसकी नेमतों का इनकार रके कौन समझदार आदमी नमक-हराम बनेगा, या किसी और को इबादत लायक़ समझकर उसको कौन नाराज़ करेगा।

हम तो अल्लाह का दिया खाते हैं, इसलिए उसी के गुण गाते हैं। हर मक-हलाल से इसी की उम्मीद की जाती है कि वह अल्लाह ही को अपना बूद मानेगा। उसके सिवा किसी और को इबादत के लायक़ न समझेगा।

यह भी हमारा ईमान है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) अल्लाह के आख़िरी ूल हैं। अल्लाह ने सारी दुनिया को सीधी राह दिखाने के लिए आपको जा था। आप ही के बताए हुए रास्ते पर चलने से अल्लाह हमसे ख़ुश गा और हम भी दुनिया में ख़ुश रहेंगे।

जो मुसलमान नहीं हैं वे भी अगर प्यारे नबी (सल्ल॰) के हालात पढ़ेंगे, ापके तौर-तरीक़ों और आपकी बातों पर विचार करेंगे तो उनका दिल ाही देगा कि आप ही सच्चे नबी हैं। आप ही की बात मानकर हम दोनों हान में ख़ुश रह सकते हैं। आपकी बताई हुई बातों से हटकर जो भी कोई त बताता है, तो उसमें खोट ज़रूर होती है।

ऐ अल्लाह! हम सबको प्यारे नबी (सल्ल॰) के रास्ते पर चला। ामीन!

शब्दार्थ और टिप्पणी

साझी	=	साथी, भागी, शरीक
नमक-हराम	=	नाशुक्रा, कृतघ्न
गुण गाना	=	तारीफ़ करना, प्रशंसा करना
नमक-हलाल	=	शुक्रगुज़ार, कृतज्ञ
तौर	=	ढंग, तरीक़ा
खोट	=	ख़राबी

अभ्यास

(क) उत्तर दो :

1. इस्लाम की पहली, अच्छी और सच्ची बात कौन-सी है?
2. अज़ान एक दिन में कितनी बार दी जाती है?
3. कलिमे के अल्फ़ाज़ (शब्द) अज़ान में किस तरह अदा किए जाते ज़बानी बताओ।
4. किसके बताए हुए रास्ते पर चलने से अल्लाह हमसे ख़ुश होगा उ हम दुनिया में भी ख़ुश रहेंगे?
5. जो मुसलमान नहीं हैं वे भी अगर मुहम्मद (सल्ल॰) के हालात पढ़ेंगे उनका दिल किस बात की गवाही देगा?
6. किस बात में खोट होती है?

(ख) ख़ाली जगहों को भरो :

1. कलिमे को दिल से मानना और.....से अदा करना ज़रूरी है

2. इसी पाक कलिमे को पढ़कर लोग.....होते हैं।

3. हम मुसलमानों का तो यही ईमान है कि.....सिर्फ़ अल्लाह की होनी चाहिए।

4. हम तो अल्लाह का दिया खाते हैं, इसलिए उसी के.....गाते हैं।

कुछ और काम

अज़ान के कलिमों को सीखकर अज़ान देने का अभ्यास करो।

7

जन्नत और जहन्नम

आज हम एक मैयत में गए थे। वहाँ बहुत-से लोग जमा हुए थे कुछ रिश्ते-नाते के थे, कुछ पड़ोसी और मिलने-जुलनेवाले। सब ग़मगी और उदास थे। घर की औरतें और बच्चे रो रहे थे। हमें भी बड़ा दुःख हुआ अपनी मौत याद आने लगी। आए दिन लोग मरते रहते हैं। औरतें मरती हैं, मर्द भी मरते हैं, बच्चे भी मरते हैं और बूढ़े भी। एक दिन स लोग मर जाएँगे। जो भी पैदा हुआ है, वह बहरहाल किसी न किसी दि मरेगा।

मरने के बाद क्या होगा? यह सवाल बार-बार मेरे दिमाग़ में उठ लगा। कफ़न-दफ़न के बाद सब घर लौटे। मुझे यह खटक बराबर लगी रही घर आकर मैंने अम्मी से पूछा। बोलीं :

"लोग इसी तरह पैदा होते और मरते रहेंगे। यहाँ तक कि ए दिन सारे जानदार मर जाएँगे। सारी दुनिया ख़त्म हो जाएगी। फि अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन सबको दोबारा ज़िन्दा करेगा। फिर सब कामों का हिसाब लेगा। जिन लोगों ने अल्लाह का कहा माना होगा। उस मर्ज़ी पर चले होंगे, अल्लाह के रसूल की पैरवी की होगी और अच्छे-अ काम किए होंगे, उनसे अल्लाह ख़ुश होगा। उन्हें रहने के लिए जन्नत दे जहाँ वे हमेशा रहेंगे। जन्नत में हर तरह का आराम होगा। अच्छे-अच्छे मह होंगे। हरे-भरे बाग़ होंगे। तरह-तरह के फल होंगे। दूध और शहद की न होंगी। अच्छे लोग वहाँ मज़े से रहेंगे। जो चाहेंगे, पाएँगे। रब के गुण गाएँ

नसे अल्लाह ख़ुश होगा, उन्हें जो मिल जाए थोड़ा है।

जिन लोगों ने अल्लाह की नाफ़रमानी की होगी; उसके हुक्म ख़िलाफ़ चले होंगे; रसूलों को झुठलाया होगा और बुरे-बुरे काम ए होंगे; उनसे अल्लाह नाख़ुश होगा। उन्हें सख़्त अज़ाब दिया जाएगा। ो लोगों का ठिकाना दोज़ख़ यानी जहन्नम होगा, जहाँ वे हमेशा गे। दोज़ख़ बहुत ही बुरा ठिकाना है। वहाँ हर तरफ़ आग की लपटें उठ ा होंगी। बुरे लोग उसी में जलेंगे। जहन्नम में बड़े-बड़े बिच्छू होंगे, ले-काले साँप होंगे। बुरे लोगों को वे डसेंगे। जहन्नमी ख़ून और ा पिएँगे। उन्हें ऐसे-ऐसे दुख दिए जाएँगे, जिन्हें हम सोच भी नहीं कते। जिससे अल्लाह तआला नाराज़ हो जाए, उसे जो सज़ा मिल जाए ा है।"

मैंने अम्मी की ये बातें सुनीं तो मेरे रोंगटे खड़े हो गए। तौबा! तौबा!!

ऐ अल्लाह, हमें अपनी मर्ज़ी पर चला। हमें नेक बना। हमें जन्नत में ाह दे। हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा। आमीन!

शब्दार्थ और टिप्पणी

मैयत में जाना	=	मरनेवाले के घर जाना
खटक लगी रहना	=	डर लगा रहना, शंका, संदेह
रोंगटे खड़े हो जाना	=	शरीर के रोएँ खड़े होना, बहुत डर जाना

अभ्यास

(क) **जन्नत,** **क़ियामत,** **जहन्नम**

उपर्युक्त शब्दों में से जिस शब्द का सम्बन्ध नीचे लिखे जिस वाक्य से है उसे उस सामने लिखो :

दुनिया ख़त्म हो जाएगी। .....

हर तरह का आराम होगा। .....

बड़े-बड़े बिच्छू और काले साँप होंगे। .....

हरे-भरे बाग़ होंगे। .....

अल्लाह सबको दोबारा ज़िन्दा करेगा। .....

बुरा ठिकाना है। .....

अल्लाह सबके कामों का हिसाब लेगा। .....

ख़ून और पीप पीएँगे। .....

दूध और शहद की नहरें होंगी। .....

(ख) संक्षेप में उत्तर दो :

1. क़ियामत क्यों आएगी? लोग दोबारा कब ज़िन्दा किए जाएँगे?
2. जन्नत में जन्नती लोग कब तक रहेंगे?
3. जहन्नम में कौन लोग जाएँगे?
4. अल्लाह से हमें क्या दुआ माँगनी चाहिए?

) ख़ाली जगहों को भरो :

1. अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन सबको दोबारा.....करेगा।
2. जन्नत में दूध और शहद की.....होंगी।
3. .....बहुत ही बुरा ठिकाना है।
4. ऐ अल्लाह! हमें.....में जगह दे।

कुछ और काम

जन्नत और जहन्नम में और क्या-क्या होगा? अपने उस्ताद और अपने अब्बू-अम्मी से मालूम करो।

इबादत

इबादत बन्दगी को कहते हैं। हम सब अल्लाह के बन्दे हैं। अल्ला ने हम सबको अपनी बन्दगी के लिए ही पैदा किया है। हम सब उसी व बन्दगी करते हैं। हर काम उसकी मर्ज़ी और उसके हुक्म से करते हैं। उस सिवा किसी और की बन्दगी या पूजा-पाठ हमारे लिए जायज़ नहीं। अल्ला के बन्दों का सिर अल्लाह के सिवा किसी और के सामने नहीं झुक चाहिए। जो लोग अल्लाह को छोड़कर अपने जैसे किसी ज़िन्दा या मु इनसान, भूत-प्रेत, जिन्नों और फ़रिश्तों के सामने झुकते हैं, या किसी देव देवता, पत्थर, पेड़ या किसी जानवर की पूजा करते हैं, या अपनी मनमा करते हैं, वे लोग अल्लाह से बग़ावत करते हैं। खाते हैं अल्लाह का और गु गाते हैं किसी और का। अल्लाह तआला ऐसे लोगों को कभी माफ़ नहीं क सकता। ऐसे लोग सख़्त सज़ा पाएँगे।

हम कोई ऐसा काम नहीं करते जो अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हो हम उसके बन्दे हैं और हमेशा उसी के हुक्म पर चलते हैं। मुसलमान व तो पूरी ज़िन्दगी बन्दगी में गुज़रती है। पाबन्दी से नमाज़ अदा करते हैं रोज़े रखते हैं। ज़कात देते हैं। हज को जाते हैं।

हम बोलते हैं तो ज़बान से कोई बुरी बात नहीं निकालते। हमेशा स बोलते हैं, झूठ के पास नहीं जाते। हम माँ-बाप की ख़िदमत, बड़ों का अद और छोटों से प्यार करते हैं। किसी का दिल नहीं दुखाते। जानवरों को भ नहीं सताते। हम लेन-देन में ईमानदारी बरतते हैं। खेल-कूद में भी बेईमा नहीं करते। हार हो या जीत, हर हाल में ईमानदारी से खेलते हैं। हम बि

किसी की कोई चीज़ नहीं लेते। वही खाते हैं जो हलाल हो, हराम चीज़ पास भी नहीं फटकते। ग़रज़ हम सिर्फ़ वे काम करते हैं; जो अल्लाह को न्द हैं और उन सारी बातों से बचते हैं जो अल्लाह को नापसन्द हैं। इस ह ज़िन्दगी गुज़ारना इबादत है, इसी लिए हमारी पूरी ज़िन्दगी ही इबादत

शब्दार्थ और टिप्पणी

जायज़	=	वह काम या बात जिसकी इस्लाम में इजाज़त है।
मनमानी करना	=	अपनी ही मर्ज़ी से काम करना।
बग़ावत	=	हुक्म न मानना और मनमानी करना।
हलाल	=	वे चीज़ें जिनको करने या काम में लाने की अल्लाह और रसूल (सल्ल॰) ने इजाज़त दी है।
हराम	=	वे चीज़ें जिनको करने या काम में लाने से अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल॰) ने रोका है।

अभ्यास

) उत्तर दो :

1. अल्लाह ने हमें किस लिए पैदा किया है?
2. कौन लोग अल्लाह तआला से बग़ावत करते हैं?
3. किस तरह की ज़िन्दगी गुज़ारना इबादत है?

(ख) नीचे अल्लाह की इबादत और अल्लाह से बग़ावतवाले काम दिए गए उनको अलग-अलग लिखो :

1. अल्लाह के सिवा किसी और के सामने झुकना।
2. अल्लाह के हुक्म पर चलना।
3. ज़िन्दा या मुर्दा इनसान के सामने झुकना।
4. देवी, देवता, पत्थर, पेड़ या किसी जानवर की पूजा-पाठ करना।
5. पूरी ज़िन्दगी अल्लाह की बन्दगी में गुज़ारना।
6. हमेशा सच बोलना।
7. जानवर को भी न सताना।
8. मनमानी करना।
9. बिना पूछे किसी की चीज़ न लेना।
10. हराम खाना।

नन्हा नमाज़ी

हो चला सवेरा, वह रात जा रही है।
सुब्ह की अज़ाँ की आवाज़ आ रही है।
मी उठो, सफ़ेदी हर सम्त छा रही है।
मेरी अच्छी अम्मी! ऐ मेरी प्यारी अम्मी!
अब्बू के साथ मस्जिद जाऊँगा आज मैं भी।

हे पे देगची में पानी ज़रा चढ़ा दो।
ों को साफ़ कर लूँ, मिसवाक भी उठा दो।
ो करूँ वुज़ू मैं, अच्छी तरह बता दो।
ड़े भी साफ़-सुथरे पहना दो जल्दी-जल्दी।
अब्बू के साथ मस्जिद जाऊँगा आज मैं भी।

नर्म-नर्म स्वेटर, यह गर्म-गर्म टोपी।
ताने भी हैं ऊनी, जुर्राब भी हैं ऊनी।
कलर भी है नया-सा, चादर भी ख़ूब मोटी।
ी नहीं लगेगी, सच कह रहा हूँ अम्मी।
अब्बू के साथ मस्जिद जाऊँगा आज मैं भी।

अल्हम्दु, क़ुलहु वल्लाह फ़र-फ़र कहो सुना दूँ।
सुब्हा-न-कल्लाहुम-म लिखकर कहो दिखा दूँ।
कै फ़र्ज़ हैं वुज़ू में, यह भी कहो बता दूँ।
कर लूँगा याद उसे भी, जो कुछ रहा है बाक़ी।
अब्बू के साथ मस्जिद जाऊँगा आज मैं भ

जब फ़र्ज़ बा-जमाअ़त, मैं पढ़ चुकूँगा अम्मी।
फिर दोनों हाथ उठाकर, माँगूँगा मैं दुआ भी।
सारी बुराइयों से मुझको बचा इलाही।
बन जाऊँ मैं नमाज़ी, बन जाएँ सब नमाज़ी।
अब्बू के साथ मस्जिद जाऊँगा आज मैं भ

(अबुल मुजाहिद 'ज़ाहि

नमाज़ और उसके फ़ायदे

अल्लाह ने हमको पैदा किया। खाने-पीने का सारा सामान दिया। ारी-प्यारी अम्मी दीं। अच्छे-अच्छे अब्बा और भाई-बहन दिए। सबके दिल प्यार दिया। घर भर की आँखों का तारा बनाया। प्यारे नबी (सल्लल्लाहु लैहि व सल्लम) को भेजा। सीधी-सच्ची राह दिखाई। दुनिया में भी हेसाब नेमतें दीं, आख़िरत में जन्नत का वादा किया, जहाँ सुख ही सुख गे। इसी लिए हम अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करते हैं। उसे ख़ुश ाने की पूरी कोशिश करते हैं। दिन-रात उसके गुण गाते हैं। अच्छे-अच्छे म करते हैं। उसकी नाख़ुशी से बचते हैं।

अल्लाह तआ़ला को ख़ुश करने का सबसे अच्छा तरीक़ा नमाज़ है। ा दिन-रात में पाँच बार नमाज़ पढ़ते हैं। मस्जिद अल्लाह तआला का बार है। हम साफ़-सुथरे होकर अल्लाह के दरबार में जाते हैं। अल्लाह का बार बड़ा शानदार है। वह तो दुनिया जहान का बादशाह है।

नमाज़ में हम अल्लाह के बहुत क़रीब हो जाते हैं। बड़े अदब से खड़े ते हैं। शौक़ से नमाज़ अदा करते हैं। अल्लाह के गुण गाते हैं। भूल-चूक माफ़ी माँगते हैं। नेक बनने का वादा करते हैं। अल्लाह को ख़ुश करके लौटते हैं।

माज़ से फ़ायदे

नमाज़ से हमें बहुत-से फ़ायदे पहुँचते हैं :

अल्लाह हमसे ख़ुश होता है।

प्यारे नबी (सल्ल॰) और माँ-बाप की आँखें ठंडी होती हैं।

3. मुहल्ले-पड़ोस के भले आदमियों से दिन में पाँच बार मुलाक़ात हो है।
4. नमाज़ी एक-दूसरे के दुख-दर्द में शरीक होते हैं। आपस में मिल रहते हैं।
5. भले लोगों की संगति में भले काम और अच्छी आदतें सीखने मौक़ा मिलता है।
6. गन्दी और बुरी बातों और बेहयाई के कामों से हम बचने लगते
7. साफ़-सुथरे रहने की आदत पड़ती है, जिससे तन्दुरुस्ती ठीक रहती
8. हम वक़्त के पाबन्द हो जाते हैं और हर काम वक़्त पर करने ल हैं।
9. ये और इस तरह की बहुत सारी अच्छाइयाँ हममें नमाज़ की वजह पैदा होती हैं। अपने इन्हीं कामों की वजह से हम सबकी आँखों तारा बन जाते हैं।

कहाँ तक गिनाएँ, नमाज़ से हमें अनगिनत फ़ायदे होते हैं। इसलि हम पाबन्दी से नमाज़ पढ़ते और ये सब फ़ायदे समेटते हैं।

शब्दार्थ और टिप्पणी

बेहिसाब	=	अनगिनत
आँखें ठंडी होती हैं	=	जी ख़ुश होता है
संगति	=	साथ
फ़ायदे समेटते हैं	=	फ़ायदे हासिल करते हैं।

अभ्यास

) उत्तर दो :

1. अल्लाह ने हमको कौन-कौन-सी नेमतें दी हैं।
2. हम नमाज़ क्यों पढ़ते हैं?
3. नमाज़ में हम क्या करते हैं?

) नीचे दी हुई बातों में से सही बात पर सही (√) का निशान लगाओ :

1. दुनिया में अच्छे काम करनेवालों से अल्लाह का वादा है :
(आख़िरत, नमाज़, जन्नत, नाराज़ी)
2. हम मस्जिद यानी अल्लाह के दरबार में जाते हैं :
(शान के साथ, बातचीत करने के लिए, साफ़-सुथरे होकर)
3. हम अल्लाह के बहुत क़रीब होते हैं :
(मस्जिद में, नमाज़ में, घर में, बाज़ार में)

) कॉलम **'अ'** को **'ब'** से सही-सही मिलाओ :

कॉलम (अ)	**कॉलम (ब)**
अल्लाह हमसे	मुलाक़ात होती है।
भले लोगों से	दुख-दर्द में शामिल होते हैं।
एक-दूसरे के	सीखने का मौक़ा मिलता है।
भले काम और अच्छी आदतें	पाबन्द हो जाते हैं।
हम वक़्त के	आँखों का तारा बन जाते हैं।
हम सबकी	ख़ुश होता है।
बेहयाई के कामों	आदत पड़ती है।
साफ़-सुथरे रहने की	से बचते हैं।

कुछ और काम

पाँचों वक़्त की नमाज़ें मस्जिद में जाकर जमाअ़त से अदा किया करो।

11

नमाज़ के औक़ात और अज़ान

हम रोज़ाना पाँच वक़्त नमाज़ पढ़ते हैं :

1. सुबह-सवेरे सूरज निकलने से पहले, 'फ़ज्र'।
2. दोपहर के बाद सूरज ढले, 'ज़ुहर'।
3. सूरज डूबने से पहले एक-डेढ़ घंटे दिन रहे, 'अस्र'।
4. सूरज डूबने के साथ ही, 'मग़रिब'।
5. रात का अंधेरा अच्छी तरह छा जाने पर डेढ़-दो घंटा रात गए स से पहले, 'इशा'।

हमारे मुहल्ले की मस्जिद में घड़ी भी है और नमाज़ के वक़ का नक़्शा भी। इनकी वजह से बड़ी आसानी हो गई है। इन मदद से नमाज़ों का वक़्त मुक़र्रर कर लिया जाता है। सब लोग व पर इकट्ठा हो जाते और जमाअ़त से नमाज़ अदा करते हैं। बद हो या कुहरा, सूरज दिखाई दे या न दे, नक़्शे और घड़ी की मदद से नम ठीक वक़्त पर अदा कर ली जाती है। मैं हमेशा वक़्त से पहले मस्जि पहुँचने की कोशिश करता हूँ। ज़रूरत हो तो झाड़ू दे देता हूँ। चटाइ बिछाने में मदद करता हूँ। नमाज़ियों के लिए लोटों में पानी भी देता हूँ।

अज़ान

पाँचों वक़्त नमाज़ से पहले अज़ान दी जाती है। मैं अज़ान हमेशा

: से सुनता हूँ। आहिस्ता-आहिस्ता खुद भी वही बोल दोहराता जाता हूँ। ा तो अज़ान मुझे याद हो गई है। ज़रूरत होती है तो मैं खुद भी अज़ान ेता हूँ। एक दिन जुह्र के वक़्त मस्जिद गया। अज़ान का वक़्त हो चुका मगर वहाँ मुअज़्ज़िन या कोई और मौजूद न था। आख़िर मैंने ही अज़ान । काबे की तरफ़ मुँह करके ऊँची जगह खड़ा हो गया। शहादत की लियाँ कानों में डालीं और ऊँची आवाज़ से कहने लगा :

اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर। अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

अश-हदु अल्ला इला-ह इल-लल्लाह

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

अश-हदु अल्ला इला-ह इल-लल्लाह

اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

अश-हदु अन-न मुहम्मदर-रसूलुल्लाह

اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

अश-हदु अन-न मुहम्मदर-रसूलुल्लाह

फिर दाईं ओर मुँह करके :

حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃِ

हय-य अ़लस्सलाह

حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃِ

हय-य अ़लस्सलाह

फिर बाईं ओर मुँह करके :

حَیَّ عَلَی الْفَلَاحِ

हय-य अ़लल फ़लाह

حَیَّ عَلَی الْفَلَاحِ

हय-य अ़लल फ़लाह

फिर काबा की ओर मुँह करके

اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ

ला इला-ह इल-ल्लाह

अज़ान देने के बाद दुआ पढ़ी। इतने में बहुत-से नमाज़ी आ गए व जमाअ़त से नमाज़ हुई।

फ़ज्र की अज़ान

एक रात मेरी आँखें बहुत सवेरे खुल गईं। चारपाई पर लेटा मैं कर बदल रहा था कि फ़ज्र की अज़ान शुरू हो गई। मैं ग़ौर से सुनने लगा व वही बोल दोहराने लगा।

हय-य अलल फ़लाह के बाद सुना तो ये दो बोल सुनाई दिए :

اَلصَّلٰوۃُ خَیْرٌ مِّنَ النَّوْمِ

अस्सलातु ख़ैरुम-मिनन्नौम

اَلصَّلٰوۃُ خَیْرٌ مِّنَ النَّوْمِ

अस्सलातु ख़ैरुम-मिनन्नौम

अब मुझे मालूम हुआ कि फ़ज्र की अज़ान में ये दो बोल दूसरे वक़्तों
। अज़ान से ज़्यादा होते हैं। ये दोनों बोल भी मुझे ख़ूब याद हो गए हैं।
रूरत पड़ी तो मैं फ़ज्र की अज़ान भी दे सकता हूँ।

अभ्यास

) उत्तर दो :

1. मुअज़्ज़िन किसे कहते हैं?
2. फ़ज्र की अज़ान में 'अस्सलातु ख़ैरुम-मिनन्नौम' कब कहा जाता है?

) ख़ाली जगहों को भरो :

1. हमारे मुहल्ले की मस्जिद में घड़ी भी है और नमाज़ों के वक़्तों का.....भी।
2. मैं हमेशा.....से पहले मस्जिद पहुँचने की कोशिश करता हूँ।
3. पाँचों वक़्त.....से पहले अज़ान दी जाती है।
4. अज़ान देते वक़्त.....की तरफ़ मुँह करके खड़े होते हैं।

(ग) नीचे जो चित्र बना हुआ है उसके ख़ानों में समय के अनुसार फ़र्ज़ नमाज़ों के नाम लिखो :

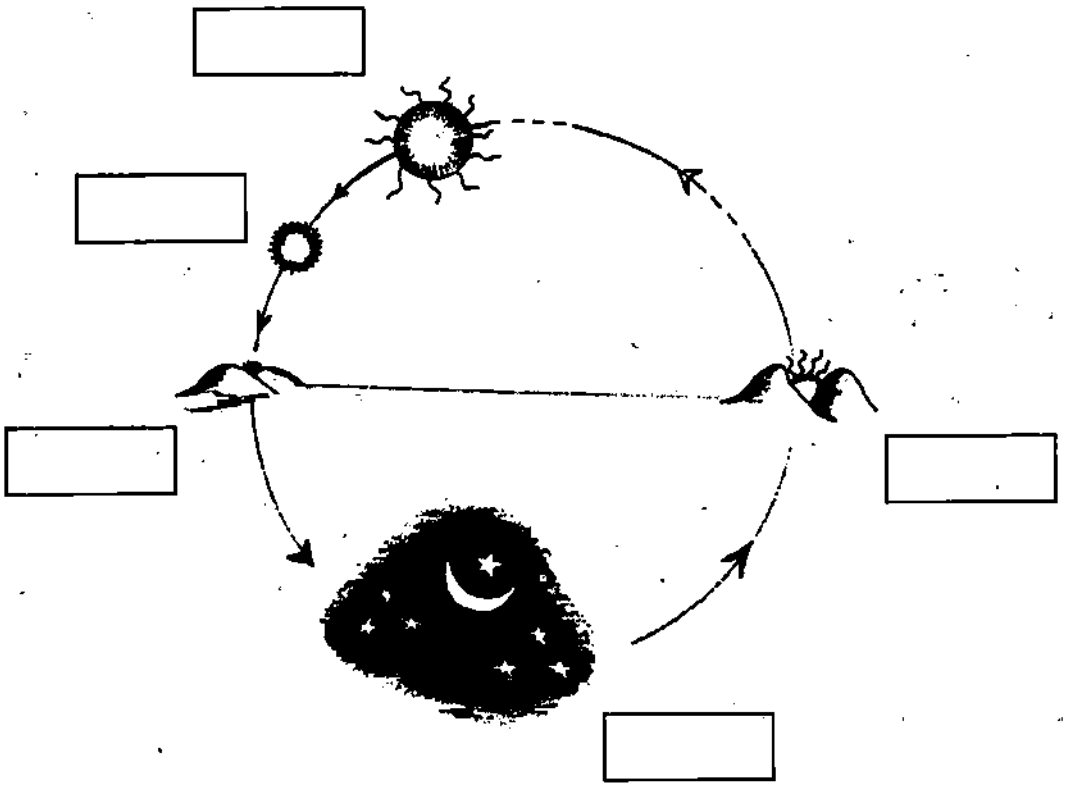

कुछ और काम

1. अज़ान के बोल अच्छी तरह याद करके अज़ान देने का अभ्यास करो।
2. मस्जिद की सफ़ाई आदि में हाथ बटाया करो।

12

वुज़ू का तरीक़ा

अज़ान की आवाज़ सुनते ही हम खेल-कूद और काम-काज बन्द रके नमाज़ के लिए चल पड़ते हैं। देर बिलकुल नहीं करते। नमाज़ हम ाँचों वक़्त मस्जिद में अदा करते हैं। मस्जिद अल्लाह तआ़ला का दरबार । मस्जिद में हम बहुत साफ़-सुथरे होकर जाते हैं। ढंग से वुज़ू करते हैं।

ुज़ू का तरीक़ा

वुज़ू करना भी मुझे ख़ूब आता है। लोटे में पाक पानी लेता हूँ। ोशिश करके ऐसी जगह बैठता हूँ कि मुँह काबा की तरफ़ रहे और पानी सी जगह गिरे कि छींटें ऊपर न आ सकें और न लोटे में गिरें। बाईं तरफ़ ोटा रखता हूँ। वुज़ू की नीयत करता हूँ। बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़कर ोन बार हाथ गट्टों तक धोता हूँ। फिर तीन बार मुँह में पानी डालकर च्छी तरह कुल्ली और ग़रारा करता हूँ। दाँत साफ़ करता हूँ। इसके बाद ोन बार नाक में पानी डालकर बाएँ हाथ की छोटी उँगली से नाक ख़ूब ाफ़ करता हूँ। फिर तीन बार चेहरा धोता हूँ। उसके बाद तीन-तीन बार ोनों हाथ कुहनियों समेत धोता हूँ। पहले दायाँ हाथ, फिर बायाँ। फिर दोनों ाथ पानी से तर करके सिर, कानों वग़ैरह का मसह करता हूँ। आख़िर में ोन बार टख़नों समेत दोनों पैर धोता हूँ। पहले दायाँ पैर, फिर बायाँ। इस रह वुज़ू करके एक तरफ़ अदब से बैठ जाता हूँ। मस्जिद में हम लोग ोर-गुल बिल्कुल नहीं करते। मस्जिद अल्लाह का घर है। अल्लाह के घर ो हम बहुत साफ़-सुथरा रखते हैं। न ख़ुद गन्दगी फैलाते हैं और न किसी ो गन्दा करने देते हैं। अल्लाह को गन्दगी बहुत नापसन्द है। कहीं गन्दगी देखाई पड़े तो हम फ़ौरन साफ़ कर देते हैं।

अभ्यास

(क) नीचे वुज़ू के कुछ काम बिना क्रम के लिखे हैं। उन्हें क्रम के अनुसार अप कॉपी में लिखो :

सिर और कानों का मसह करना

नीयत करना

कुल्ली करना

कुहनियों समेत हाथ धोना

गट्टों तक हाथ धोना

बिस्मिल्लाह पढ़ना

नाक साफ़ करना

पैर धोना

चेहरा धोना

कुछ और काम

1. वुज़ू कैसे किया जाता है? लोटे में पानी लो और करके दिखाओ।
2. मसह कैसे किया जाता है? करके दिखाओ।

3

हम नमाज़ कैसे पढ़ते हैं?—1

वुज़ू कर चुके। वक़्त हो गया। लोग फ़र्ज़ नमाज़ के लिए उठ खड़े ।। सफ़ें सीधी की जाने लगीं। सबका मुँह काबे की तरफ़ है। सबसे आगे केले इमाम साहब खड़े हुए, उनके पीछे बड़ों की सफ़। सबसे पीछे हम चों की सफ़। जमाअ़त में सारे नमाज़ी कंधे से कंधा मिलाकर ख़ड़े होते बीच में जगह बिलकुल नहीं छोड़ते। सफ़ें भी बिलकुल सीधी होती हैं। र तकबीर कही जाती है।

क़बीर (इक़ामत)

तकबीर भी मुझे ख़ूब याद हो गई है। है भी तो बहुत आसान! अज़ान के बोलों में **हय-य अलल फ़लाह** के बाद—

قَدْقَامَتِ الصَّلٰوةُ

क़द क़ा मतिस-सलाह

قَدْقَامَتِ الصَّلٰوةُ

क़द क़ा मतिस-सलाह

यही दो बोल बढ़ा देते हैं। बाक़ी सब बोल वही हैं, जो अज़ान में कहे ते हैं।

अज़ान और तकबीर में यह अन्तर है कि अज़ान कानों में शहादत की ालियाँ डालकर ज़रा ठहर-ठहरकर बहुत ऊँची आवाज़ में कही जाती है,

लेकिन तकबीर न तो ठहर-ठहरकर और न ज़्यादा ऊँची आवाज़ में व
जाती है। न शहादत की उँगलियाँ कानों में डाली जाती हैं। तकबीर क
समय हाथ पहलू से सटे और लटके हुए होते हैं।

नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा[1]

तकबीर के बाद इमाम साहब ऊँची आवाज़ से 'अल्लाहु अक
कहते हुए दोनों हाथ उठाते हैं, फिर तले-ऊपर रखकर हाथ बाँध लेते
बायाँ हाथ नीचे, दायाँ ऊपर। नमाज़ भी मुझे ख़ूब याद हो गई है। हम
भी आहिस्ता से 'अल्लाहु अकबर' कहते हुए हाथ उसी तरह उठाते
बाँध लेते हैं। नमाज़ शुरू हो गई। अब हम नमाज़ में हैं। अल्लाह के सा
हाथ बाँधकर बहुत अदब से खड़े हैं। अब हम न तो किसी से बात
सकते हैं, न इधर-उधर देख सकते। सजदे की जगह नज़र जम
आहिस्ता-आहिस्ता सना पढ़ते हैं :

سُبْحٰنَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ وَتَبَارَکَ اسْمُکَ

وَتَعَالٰی جَدُّکَ وَلَا اِلٰہَ غَیْرُکَ

सुब्हा-न कल्ला हुम-म व बि हम्दि-क, व तबा-र कस्मु-क,
व तआला जद्दु-क, व ला इला-ह ग़ैरु-क।

---

1. **हिदायत :** बच्चों के सरपरस्त जिस मसलक के हों उस्ताद उनके बच्चों को नमाज़ में खड़े होने, उठाने या बाँधने, बैठने, आमीन आहिस्ता या आवाज़ से कहने वग़ैरह के बारे में उनके मसलक मुताबिक़ बताएँ। क़ियाम, क़ुऊद, रुकूअ, सुजूद हर एक का ठीक तरीक़ा करके बताएँ और बार-अभ्यास कराके ठीक-ठीक अदा करने का आदी बना दें। नमाज़ याद कराने का आसान तरीक़ा य कि पूरी नमाज़ बुलन्द आवाज़ से किसी ऐसे बच्चे के पीछे अदा कराएँ, जिसे औरों से ज़्यादा याद और जिसकी आवाज़, तलफ़्फ़ुज़, मख़ारिज वग़ैरह ठीक हों।

उसके बाद तअ़व्वुज़ :

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

अऊज़ु बिल्लाहि मिनश-शैतानिर-रजीम

और तस्मिया पढ़ते हैं :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस-मिल्ला-हिर-रहमा-निर-रहीम

फिर सूरा फ़ातिहा पढ़ी जाती है। सूरा फ़ातिहा ख़त्म होते ही सब मामीन' कहते हैं। फिर इमाम साहब कोई 'सूरा' पढ़ते हैं। कभी लम्बी रा, कभी छोटी। कई छोटी सूरतें मुझे याद हो गई हैं। 'अलहम्दु शरीफ़', ुल हुवल्लाह', 'इन्ना आतैना', 'वल् अस्रि' तो मैं कब की याद कर चुका । अल्लाह ने चाहा तो 'पारा अम्म' की आख़िरी दस सूरतें बहुत जल्द याद र लूँगा।

'अलहम्दु शरीफ़' और एक सूरा पढ़कर 'अल्लाहु अकबर' कहते हुए टनों पर हाथ रखकर झुकते हैं यानी रुकूअ करते हैं और कम से कम तीन ार या पाँच या सात बार सब आहिस्ता-आहिस्ता कहते हैं :

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ

सुब्हा-न रब्बि-यल अज़ीम

र इमाम साहब ऊँची आवाज़ से :

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ

समि-अल्लाहु लिमन हमिदह

हते हुए सीधे खड़े हो जाते हैं। बाक़ी नमाज़ी धीरे से :

رَبَّنَا لَکَ الْحَمْدُ

रब्बना ल-कल हम्द

कहते हुए खड़े होते हैं। मुझे 'रब्बना ल-कल हम्द' के आगे इतना हिस्
और भी याद हो गया है :

حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ

हम्दन कसीरन तय्यिबन मुबारकन फ़ीहि

इसके बाद अल्लाहु अकबर कहते हुए सजदे में जाते हैं। नाक अं
पेशानी दोनों ज़मीन पर टेककर कम से कम तीन बार या पाँच या सात ब
आहिस्ता-आहिस्ता कहते हैं :

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى

सुब्हा-न रब्बि-यल आला

फिर 'अल्लाहु अकबर' कहते हुए सिर उठाते हैं और थोड़ी देर इत्मीनान
साथ बैठकर 'अल्लाहु अकबर' कहते हुए दूसरा सजदा करते हैं और ती
पाँच या सात बार आहिस्ता से 'सुब्हा-न रब्बि-यल आला' कहते हैं
'अल्लाहु अकबर' कहते हुए दूसरे सजदे से सिर उठाते और सीधे खड़े
जाते हैं। इस तरह एक रकअ़त हो गई।

शब्दार्थ और टिप्पणी

सफ़	=	पंक्ति, क़तार
तकबीर	=	अल्लाहु अकबर कहना
शहादत की उँगली	=	दाएँ हाथ के अँगूठे के पास की उँगली

अभ्यास

) उत्तर दो :

1. हम किस तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ते हैं?
2. अज़ान और तकबीर (इक़ामत) में क्या फ़र्क़ है?
3. तअ़व्वुज़ किसे कहते हैं?
4. तस्मिया किसे कहते हैं?
5. 'समि-अल्लाहु लिमन हमिदह' के जवाब में क्या कहते हैं? सुनाओ।

) उचित जोड़े बनाओ :

कॉलम (अ)	कॉलम (ब)
1. इमाम साहब	कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होते हैं।
2. तमाम नमाज़ी	सीधी कर लेते हैं।
3. सफ़ें	इधर-उधर नहीं देखते।
4. नमाज़ में	सबसे आगे अकेले खड़े होते हैं।
5. क़द क़ा-मतिस्सलाह	सुब्हा-न रब्बियल आला।
6. हाथ बाँधने का तरीक़ा	तकबीर (इक़ामत) में कहते हैं।
7. अल्हम्दु शरीफ़ ख़त्म होते ही	दायाँ हाथ ऊपर बायाँ हाथ नीचे रखते हैं।
8. रुकूअ़ की तस्बीह	सुब्हा-न रब्बियल अज़ीम
9. सजदे की तस्बीह	'आमीन' कहते हैं।

कुछ और काम

इक़ामत सुनाओ।
सना सुनाओ।
सूरा फ़ातिहा पढ़ो।
क़ुल हुवल्लाह, इन्ना आतैना कल कौसर और वल् अस्रि की सूरतें पढ़ो।

14

हम नमाज़ कैसे पढ़ते हैं?—2

पहली रकअ़त के बाद खड़े होकर उसी तरह दूसरी रकअ़त अदा व हैं जिस तरह पहली रकअ़त अदा की थी। लेकिन दूसरी रकअ़त में 'सुब्ह कल्लाहुम-म' और 'अऊज़ु-बिल्लाह' नहीं पढ़ते, 'बिस्मिल्लाह' से शुरू देते हैं। दूसरी रकअ़त के दोनों सजदों के बाद 'अल्लाहु अकबर' कहते खड़े होने के बजाय इत्मीनान से बैठ जाते हैं और आहिस्ता से 'अत्तहिय्य पढ़ते हैं। अत्तहिय्यात भी मुझे याद है। फ़र-फ़र सुना सकता हूँ :

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّيِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ

وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ۝

अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस्सल वातु वत्तय्यिबातु, अस्सलामुअलै-क अय्यु नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुह, अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहि सालिहीन, अशहदु अल्ला-इला-ह इल-लल्लाहु व अशहदु अन-न मुहम्म अब्दुहू व रसूलुह।

'अशहदु अल्ला इला-ह इल-लल्लाहु' कहते हुए शहादत की उँगली उठाते हैं।

अगर दो ही रकअ़तें पढ़नी हैं, जैसे फ़ज्र के वक़्त तो अत्तहिय्यात

: दुरूद शरीफ़ और दुआ पढ़कर सलाम फेर देते हैं। दुरूद शरीफ़ भी मुझे
: है :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَاصَلَّیْتَ
عَلٰی اِبْرَاھِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ
اَللّٰھُمَّ بَارِکْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَابَارَکْتَ
عَلٰی اِبْرَاھِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ

अल्लाहुम-म सल्लि अला मुहम्मदिंव व अला आलि मुहम्मदिन कमा लै-त अला इबराही-म व अला आलि इबराही-म इन्न-क हमीदुम-मजीद।

अल्लाहुम-म बारिक अला मुहम्मदिंव व अला आलि मुहम्मदिन कमा क-त अला इबराही-म व अला आलि इबराही-म इन्न-क हमीदुम-मजीद।

सलाम फेरने का तरीक़ा यह है :

बैठे-बैठे दाईं तरफ़ मुँह करके कहते हैं :

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُاللّٰہِ

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह

फिर बाईं तरफ़ मुँह करके कहते हैं :

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُاللّٰہِ

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह

ाम पर नमाज़ ख़त्म हो जाती है।

हाँ, अगर चार रकअ़तें पढ़नी हों, जैसे 'ज़ुह्र', 'अस्र' या 'इशा' के

वक़्त या तीन रकअ़तें, जैसे 'मग़रिब' के वक़्त, तो दूसरी रकअ़त के ब
सिर्फ़ 'अत्तहिय्यात' पढ़कर 'अल्लाहु अकबर' कहते हुए खड़े हो जाते हैं उ
बाक़ी दो रकअ़तें या मग़रिब की तीसरी रकअ़त पढ़ते हैं। लेकिन
रकअ़तों में खड़े होकर 'बिस्मिल्लाह' के बाद सिर्फ़ 'अल्हम्दु शरीफ़' पढ़
'आमीन' कहते हैं। फिर रुकूअ और सजदे करते हैं, कोई सूरा नहीं मिला
बाक़ी रकअ़तें पूरी करके इत्मीनान से बैठते और अत्तहिय्यात, दुरूद शर
और दुआ पढ़कर सलाम फेर देते हैं। दुरूद शरीफ़ के बाद की दुआ भी
याद है :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ ظُلْمًا كَثِیْرًا وَّلَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ
اِلَّا اَنْتَ فَاغْفِرْلِیْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِیْ اِنَّكَ
اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ۝

**अल्लाहुम-म इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी ज़ुल्मन कसीरंव वला यग़फ़िरुज़्ज़ुनू-
इल्ला अन-त फ़ग़फ़िरली मग़फ़िरतम मिन इन्दि-क वरहम्नी इन्न-क अन्त
ग़फ़ूरुर्रहीम।**

सलाम फेरने के बाद अल्लाह से दुआ माँगते हैं। यह है फ़र्ज़ नम
पढ़ने का तरीक़ा। यही तरीक़ा प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)
अल्लाह के हुक्म से सिखाया है। दूसरी क़ौमों ने पूजा-पाठ के और बहुत
तरीक़े अपनी तरफ़ से निकाल लिए हैं। लेकिन अल्लाह को सिर्फ़ य
तरीक़ा पसन्द है। दूसरे तरीक़ों से अल्लाह ख़ुश होने के बजाय नार
होता है। इसलिए हम सिर्फ़ प्यारे नबी (सल्ल॰) के बताए हुए तरीक़े
नमाज़ पढ़ते हैं।

अभ्यास

ऊ) उत्तर दो :

1. नमाज़ किस तरह शुरू होती है और किस तरह ख़त्म होती है?
2. नमाज़ किन कलिमों के साथ ख़त्म की जाती है?

ऋ) नीचे कुछ बातें लिखी हैं। सही बात के सामने (स) और ग़लत बात के सामने (ग़) लिखो :

1. दूसरी रकअ़त में सुब्हा-न कल्ला हुम्-म और अऊज़ूबिल्लाह पढ़ते हैं। ( )
2. दूसरी रकअ़त के सजदों के बाद खड़े हो जाते हैं। ( )
3. दरूद शरीफ़ से पहले अत्तहिय्यात पढ़ते हैं। ( )
4. पहले दाईं तरफ़ फिर बाईं तरफ़ मुँह करके सलाम फेरते हैं। ( )
5. तीन या चार रकअ़तें पढ़नी हों तो दो रकअ़तों के बाद सलाम फेरकर खड़े होते हैं। ( )
6. ज़ुह्र, अस्र और इशा की नमाज़ में चार-चार रकअ़तें फ़र्ज़ हैं। ( )
7. मग़रिब की नमाज़ में फ़र्ज़ की दो रकअ़तें हैं। ( )
8. फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ रहे हों तो तीसरी और चौथी रकअ़त में कोई सूरा नहीं मिलाते। ( )
9. दुरूद शरीफ़ के बाद दुआ पढ़ते ही नमाज़ ख़त्म हो जाती है। ( )
10. नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा प्यारे नबी (सल्ल॰) ने सिखाया है। ( )
11. पूजा-पाठ के दूसरे सब तरीक़े ग़लत हैं। ( )

(ग) उचित जोड़े लगाओ :

1.	फ़ज्र	चार रकअ़तें फ़र्ज़
2.	ज़ुह्र	दो रकअ़तें फ़र्ज़
3.	अस्र	तीन रकअ़तें फ़र्ज़
4.	मग़रिब	चार रकअ़तें फ़र्ज़
5.	इशा	चार रकअ़तें फ़र्ज़

कुछ और काम

1. अत्तहिय्यात सुनाओ।
2. दुरूद शरीफ़ कौन सुनाएगा?
3. दुरूद शरीफ़ के बाद की दुआ कौन सुनाएगा?

प्यारे नबी (सल्ल॰)

हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि व लम) हैं। आप अरब देश के रहनेवाले थे। अरब हमारे यहाँ से दूर, बहुत पश्चिम में है। अरब में एक मशहूर शहर मक्का है। आप मक्का शहर ैदा हुए थे। मक्का शहर में अल्लाह तआ़ला का पाक घर काबा है। हम मुसलमान काबा की तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ते हैं। काबा हम मुसलमानों का क़िबूला है। मुसलमान हज करने के लिए काबा जाते

अल्लाह तआ़ला का यह पाक घर 'काबा' हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) र उनके प्यारे बेटे हज़रत इसमाईल (अलैहि॰) ने मिलकर बनाया था।

ये दोनों बाप-बेटे अल्लाह के पैग़म्बर थे। हमारे प्यारे नबी (सल्ल॰) ीं की औलाद में से हैं। अरब में एक मशहूर क़बीला क़ुरैश का था। श क़बीले में हाशिम का घराना बहुत ऊँचा था। इसी घराने के लोग ब के सरदार होते थे। प्यारे नबी (सल्ल॰) भी हाशिम के घराने के थे। मके अब्बू का नाम अब्दुल्लाह था। आपकी अम्मी जान का नाम आमिना । दाई हलीमा आपकी दूध अम्माँ थीं। आपने इन्हीं का दूध पिया था। मके अब्बू आपके पैदा होने से कुछ दिन पहले ही चल बसे थे।

जब आप छह वर्ष के हुए तो आपकी अम्मी जान का भी साया सिर से गया। दादा जान ने आपको पाला-पोसा। आठ वर्ष के हुए तो दादा भी बसे। अब चचा अबू तालिब ने आपको पाला-पोसा। अबू तालिब मसे बहुत प्यार करते थे।

आप बचपन ही से बहुत अच्छे थे। बुरे कामों और बुरी बातों के प
न फटकते थे ।

प्यारे नबी (सल्ल॰) सदा सच बोलते थे। सब आपको 'सादिक़' क
थे। सब आपकी बात का यक़ीन करते थे। आप बड़े अमानतदार थे।
आपको 'अमीन' कहते थे। सब आप पर भरोसा करते थे। आप सब
भला चाहते थे। सब आपकी इज़्ज़त करते थे। सब आपसे प्यार करते

प्यारे नबी (सल्ल॰) 25 साल के हुए तो बीबी ख़दीजा से शादी
ली। बीबी ख़दीजा बड़ी अच्छी थीं। आपको बहुत आराम पहुँचाती
आप भी उनका बड़ा ख़्याल रखते थे।

चालीस साल के हुए तो अल्लाह ने आपको नबी बनाया। आप
क़ुरआन उतारा। क़ुरआन अल्लाह की पाक किताब है। आप अल्लाह
हुक्मों पर चलते थे। अच्छे काम करके दिखाते थे। सबको अल्लाह
पैग़ाम पहुँचाते थे।

भले लोग मान गए। अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ले आ
आपके साथी बन गए। ये लोग 'मुसलमान' कहलाए।

बुरे लोग बिगड़ गए। अल्लाह और रसूल के दुश्मन हो गए। आप
कहा न माना, उल्टे आपको सताने लगे। ये लोग 'काफ़िर' (इनक
कहलाए।

काफ़िरों (इनकारियों) ने प्यारे नबी (सल्ल॰) और आपके अ
साथियों को बहुत दुःख दिया। मारा-पीटा, घर से बेघर किया। प्यारे
(सल्ल॰) और आपके अच्छे साथी सब कुछ सहते रहे, सहते रहे और ल
को अच्छी बातें बताते रहे। बराबर अपने काम में लगे रहे। आख़िर अल्
तआला की मदद आई। काफ़िरों (इनकारियों) का ज़ोर टूटा।

सारे अरब में इस्लाम का बोलबाला हो गया।

दुरूद और सलाम हो प्यारे नबी (सल्ल॰) पर।

اللّٰهُمَّ صَلِّ علٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّبارِکْ وَسَلِّمْ

अल्लाहुम-म सल्लि अला मुहम्मदिंव व अला आलि मुहम्मदिंव व रि-क व सल्लिम।

अभ्यास

5) उत्तर दो :

1. लोग हज करने के लिए कहाँ जाते हैं?
2. काबा किसने बनवाया था?
3. प्यारे नबी (सल्ल॰) का घराना कौन-सा था?
4. प्यारे नबी (सल्ल॰) के अब्बा और अम्मी जान के नाम बताओ।
5. प्यारे नबी (सल्ल॰) बचपन ही से कैसे थे?
6. मुहम्मद (सल्ल॰) को मक्का के लोग सादिक़ और अमीन क्यों कहते थे?
7. बीबी ख़दीजा (रज़ि॰) कैसी थीं?
8. अल्लाह और रसूल (सल्ल॰) पर ईमान लानेवाले क्या कहलाते हैं?
9. अल्लाह और रसूल (सल्ल॰) के दुश्मन क्या कहलाते हैं?

(ख) कुछ प्रश्न और उनके नीचे उनके उत्तर लिखे गए हैं। उन उत्तरों में से स
उत्तर चुनकर प्रश्न के सामने लिखो :

1. हमारे देश से अरब देश किस दिशा में है?

(पूरब में, उत्तर में, पश्चिम

2. अरब का मशहूर शहर कौन-सा है?

(बग़दाद, मक्का, काबु

3. हम किस ओर मुँह करके नमाज़ पढ़ते हैं?

(काबा, मदीना, मस्जि

4. काबा किसका क़िबूला है?

(मुसलमानों का, यहूदियों का, ईसाइयों क

5. अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को नबी बनाया तो उस स
आपकी उम्र कितनी थी?

(पच्चीस साल, चालीस साल, तिरसठ सा

(ग) उचित जोड़े लगाओ :

	कॉलम (अ)	**कॉलम (ब)**
1.	हज़रत इबराहीम (अलैहि॰)	दूध अम्माँ
2.	दाई हलीमा	नबी (सल्ल॰) के चचा
3.	अबू तालिब	हज़रत इसमाईल (अलैहि॰)
4.	अल्लाह की पाक किताब	अल्लाहुम-म सल्लि अ़ला मुह दिंव व अ़ला आलि मुहम्मदिंव बारि-क व-सल्लिम
5.	दुरूद-सलाम	अल्लाह का घर
6.	काबा	क़ुरआन

6

प्यारे नबी(सल्ल॰) के प्यारे साथी(रज़ि॰)

प्यारे नबी (सल्ल॰) के प्यारे साथियों को सहाबा (रज़ि॰) कहते हैं। ारे नबी तो सारे इनसानों में सबसे अच्छे थे। आपके प्यारे साथी भी बहुत अच्छे लोग थे। आप उनसे बहुत मुहब्बत रखते थे। सहाबा (रज़ि॰) भी पको अपने माँ-बाप से ज़्यादा चाहते थे। आपके इशारे पर जान निछावर ने के लिए तैयार रहते थे। आपने उन्हें बहुत अच्छी-अच्छी बातें बताई । अच्छे-अच्छे तौर-तरीक़े सिखाए थे। सहाबा (रज़ि॰) जो बातें भी प्यारे ी (सल्ल॰) से सीखते थे, उनपर ख़ुद भी अमल करते थे और दूसरों तक चाते थे। वे हमेशा इसी फ़िक्र में रहते थे कि कौन-से काम करें, जिनसे ल्लाह और उसके रसूल ख़ुश हों।

हमारे इन बुज़ुर्गों ने दीन की राह में बहुत दुख झेले। अल्लाह के दीन फ़ैलाने के लिए ख़ून-पसीना एक कर दिया। अल्लाह की राह में हर तरह क़ुरबानी देने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। मारे गए, सताए गए और तरह का दुख हँसी-ख़ुशी झेलते रहे। अल्लाह ने उन्हें जिस हाल में भी ा, वे राज़ी रहे। अल्लाह उनसे राज़ी हो। इन बुज़ुर्गों की ज़िन्दगी में हमारे ए बड़ा सबक़ है। इनका हाल पढ़कर हम ज़िन्दगी गुज़ारने का सही ोक़ा सीख सकते हैं।

प्यारे सहाबा (रज़ि॰) में कुछ तो इतने अच्छे थे कि अल्लाह ने ख़ुश कर उनकी ज़िन्दगी ही में उनके जन्नती होने की ख़ुशख़बरी दे दी थी। ारे नबी (सल्ल॰) के प्यारे साथियों में जो आपसे जितना ज़्यादा क़रीब रहा, ने अपनी बिसात भर उतना ही ज़्यादा फ़ायदा उठाया और उतना ही

ज़्यादा दूसरों को फ़ायदा पहुँचाया। प्यारे नबी (सल्ल॰) के सच्चे दोस्त हज़र
अबू-बक्र सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु), हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰), हज़र
उसमान ग़नी (रज़ि॰), हज़रत अली (रज़ि॰), प्यारे नबी (सल्ल॰) की बीवि
हज़रत ख़दीजा (रज़ियल्लाहु अन्हा) और हज़रत आइशा (रज़ि॰), आप
चहेती बेटी हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) और प्यारे नबी (सल्ल॰) के दोनों नवा
हज़रत हसन (रज़ि॰) और हज़रत हुसैन (रज़ि॰), हज़रत अबू-हुरैरा (रज़ि
हज़रत ज़ैद-बिन-हारिसा (रज़ि॰) और हज़रत बिलाल (रज़ि॰) वग़ैरह बहुत
मशहूर सहाबा और सहाबियात हैं। अल्लाह तआला इन सबसे राज़ी ह
आपके प्यारे साथियों का हम सब पर बहुत एहसान है। हम उनके हाल
पढ़कर उन जैसे बनने की कोशिश करेंगे। अल्लाह तआ़ला हमें उनकी पैर
की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

जान निछावर करना	=	क़ुरबान होना, बहुत मुहब्बत करना
ख़ून-पसीना एक करना	=	सख़्त मेहनत करना, कठोर परिश्रम कर
एहसान	=	उपकार, नेकी, भलाई
तौफ़ीक़	=	हिदायत, रहनुमाई

अभ्यास

(क) नीचे कुछ बातें लिखी हैं। इनमें से जो सहाबा (रज़ि॰) के बारे में हैं, उन नीचे लकीर खींचो :

अच्छे थे। प्यारे नबी (सल्ल॰) पर जान निछावर करते थे। आराम से बैठे रहनेवाले थे। अच्छी बातें और अच्छे तौर-तरीक़े सीखते थे। ख़ुद ही अमल कर लेनेवाले थे। अल्लाह और रसूल (सल्ल॰) को

ख़ुश करने की फ़िक्र में लगे रहते थे। बस गिनती के कुछ लोग थे। प्यारे नबी (सल्ल॰) से फ़ायदा उठाकर दूसरों को फ़ायदा पहुँचानेवाले थे। उनका हम पर बड़ा एहसान है। अल्लाह के दीन (धर्म) को फैलाने के लिए ख़ून-पसीना एक कर दिया।

नीचे चाँद में प्यारे नबी (सल्ल॰) का नाम और एक सितारे में एक मशहूर सहाबी (रज़ि॰) का नाम लिखा है। दूसरे मशहूर सहाबा (रज़ि॰) के नाम तुम बाक़ी सितारों में लिखो :

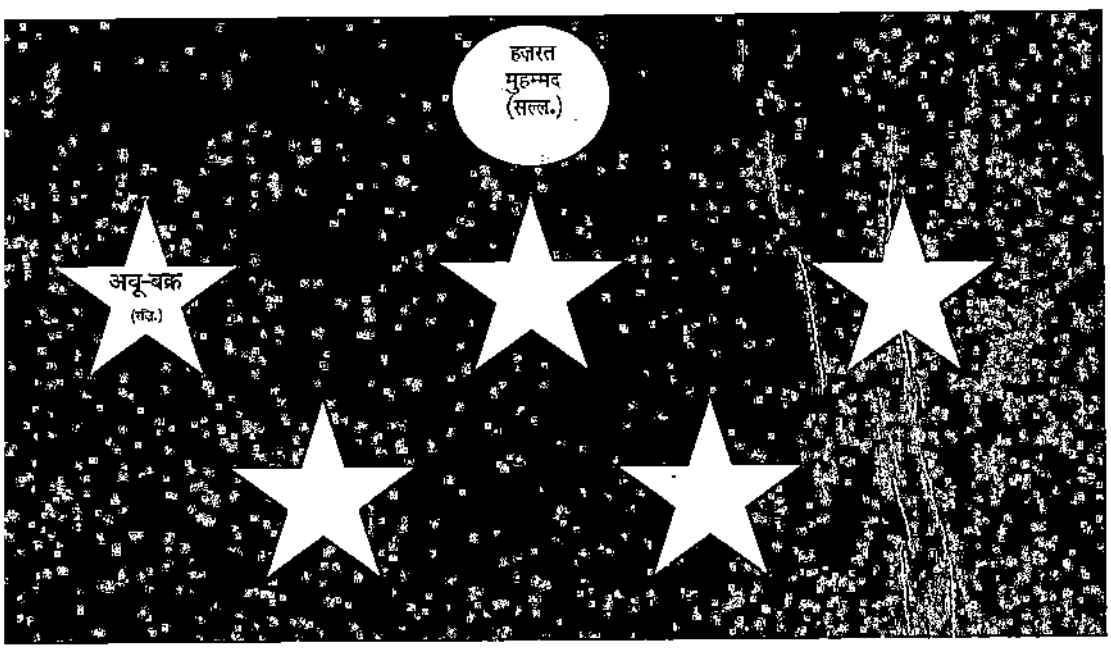

उचित जोड़े लगाओ :

कॉलम (अ)	**कॉलम (ब)**
1. सहाबी	(क) हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰)
2. बेटी	(ख) प्यारे नबी (सल्ल॰) के साथी
3. नाती (नवासे)	(ग) हज़रत ख़दीजा (रज़ि॰)
4. बीवी	(घ) हज़रत हसन-हुसैन (रज़ि॰)

17

अच्छे बच्चे

प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के प्यारे साथी तो ब अच्छे लोग थे ही, उस ज़माने के बच्चे भी बड़े नेक और बहादुर थे। वे प नबी (सल्ल॰) को बहुत चाहते थे। उनमें से कुछ बच्चों का हाल हम सुन हैं।

1. प्यारे नबी (सल्ल॰) से मुहब्बत

एक बच्चा था नन्हा-मुन्ना, उसका नाम था ज़ैद। ज़ैद को कुछ ल पकड़कर ले आए और मक्का शहर में बेचने लगे। हज़रत ख़दीजा (रज़ि को मालूम हुआ तो उन्होंने उस बच्चे को ख़रीदकर प्यारे नबी (सल्ल॰) ख़िदमत में पेश कर दिया।

प्यारे नबी (सल्ल॰) बच्चों से बेहद प्यार करते थे। इस बच्चे से आपको और ज़्यादा मुहब्बत हो गई, क्योंकि माँ-बाप से बिछड़ जाने बाद अब आप ही उसके सब कुछ थे। आपने मीठी-मीठी बातों अ अच्छे बर्ताव से उस बच्चे का मन मोह लिया। वह बहुत जल्द आप हिल-मिल गया और हर वक़्त आपके साथ रहने और आपकी ख़िदमत क लगा।

कुछ दिनों बाद बच्चे के बाप को पता चला। वह अपने बेटे को ढूँढ हुआ आपके पास पहुँचा और अपने बेटे को वापस माँगने लगा। प्यारे न ने बच्चे को आज़ाद कर दिया, मगर वह बच्चा आपसे इतना प्यार करने ल था कि आपको छोड़कर अपने घर जाने के लिए तैयार न हुआ। अ

ल्ल॰) की अच्छाइयाँ और बेटे की ज़िद देखकर बाप भी उसे आप ही के स छोड़ देने पर राज़ी हो गया। यह बच्चा प्यारे नबी (सल्ल॰) को अपने -बाप से भी ज़्यादा चाहता था। इस बच्चे ने प्यारे नबी (सल्ल॰) के घर रहने से बहुत ज़्यादा फ़ायदा उठाया। आज तक मुसलमान हज़रत ज़ैद ज़ि॰) का नाम बड़ी इज़्ज़त से लेते हैं।

. दीन के लिए जान लड़ाना

प्यारे नबी (सल्ल॰) सारी दुनिया के लिए रहमत बनकर आए थे। आप ल्ल॰) लोगों के साथ बहुत अच्छा बर्ताव करते थे। उनको अच्छी बातों ा हुक्म देते और बुरी बातों से रोकते थे। अच्छे लोग आपकी बातें मान ए। बुरे लोग आपके दुश्मन हो गए। उन्होंने आप पर और आपके प्यारे थियों पर हमला कर दिया। आप और आपके प्यारे साथी भी अल्लाह ा राह में लड़ने निकले। कुछ कम उम्र लड़के भी दुश्मनों से लड़ने के लिए ज खड़े हुए। मगर उन्हें रास्ते से यह कहकर वापस कर दिया गया कि तुम भी छोटे हो।

एक लड़का था राफ़ेअ़ (रज़ि॰)। जब उसे मना किया गया तो वह पंजों बल खड़ा हो गया, ताकि क़द ऊँचा दिखाई दे। उसका शौक़ देखकर प्यारे ी (सल्ल॰) ने उसे फ़ौज के साथ जाने की इजाज़त दे दी।

अब तो एक और बच्चा समरा (रज़िअल्लाहु अन्हु) ने भी ज़िद की। ला, "मैं राफ़ेअ़ को पछाड़ सकता हूँ। मुझे भी लड़ाई में जाने दिया ए।"

दोनों का मुक़ाबला हुआ। समरा (रज़ि॰) ने वाक़ई राफ़ेअ़ (रज़ि॰) को त कर दिया। अब तो उसे भी इजाज़त मिल गई। वह भी ख़ुश-ख़ुश ल्लाह की राह में लड़ने के लिए फ़ौज के साथ रवाना हो गया।

3. भेद छिपाना

हज़रत अनस (रज़ि॰) एक मशहूर सहाबी गुज़रे हैं। आप बचपन
से बहुत नेक थे। एक दिन की बात है, वे बच्चों के साथ खेल रहे थे। प्य
नबी (सल्ल॰) उधर से गुज़रे। बच्चों को सलाम किया। हज़रत अनस (रज़ि
को बुलाया। प्यार किया और एक काम से कहीं भेज दिया। काम पूरा हो
में देर लग गई। घर पहुँचे तो उनकी अम्मी जान ने पूछा,

"अनस! तुम इतनी देर से कहाँ थे?"

हज़रत अनस बोले, "अम्मी, प्यारे नबी (सल्ल॰) ने एक काम से भेज
था।"

माँ ने कहा, "वह क्या?"

आप (रज़ि॰) बोले, "वह एक भेद है।"

माँ ने कहा, "देखो बेटा! प्यारे नबी (सल्ल॰) का भेद किसी को
बताना।"

हज़रत अनस ने यह बात गिरह में बाँध ली और ज़िन्दगी भर किस
से न बताया।

हज़रत साबित (रज़ि॰) हज़रत अनस (रज़ि॰) के गहरे दोस्त थे। आप
उनसे भी नहीं बताया। एक दिन इस वाक़िए का ज़िक्र करके कहने लगे
"साबित! अगर मैंने यह भेद किसी को बताया होता तो तुमको ज़रू
बताता।"

अभ्यास

) नीचे एक ओर प्यारे नबी (सल्ल॰) के ज़माने के कुछ बच्चों के नाम और दूसरी ओर उनके बारे में बताई हुई बातें हैं। लकीरों के द्वारा सही उत्तर को मिलाओ–

हज़रत ज़ैद (रज़ि॰)	जिहाद के शौक़ में पंजों के बल खड़े हो गए।
हज़रत राफ़ेअ़ (रज़ि॰)	हज़रत अनस (रज़ि॰) ने उन्हें भेद नहीं बताया।
हज़रत समरा (रज़ि॰)	प्यारे नबी (सल्ल॰) ने उन्हें एक काम के लिए भेजा था।
हज़रत अनस (रज़ि॰)	उन्होंने राफ़ेअ़ (रज़ि॰) को चित कर दिया था।
हज़रत साबित (रज़ि॰)	प्यारे नबी (सल्ल॰) को इतना चाहते थे कि आपको छोड़कर जाने के लिए तैयार न हुए।

) ख़ाली जगहों को भरो–

1. प्यारे नबी (सल्ल॰) के ज़माने के बच्चे भी बड़े..... और बहादुर थे।
2. प्यारे नबी (सल्ल॰).....से बेहद प्यार करते थे।
3. प्यारे नबी (सल्ल॰) सारी दुनिया के लिए.....बनकर आए थे।
4. प्यारे नबी (सल्ल॰) अच्छी बातों का हुक्म देते और.....से रोकते थे।

) निम्नलिखित कथन किसके हैं? उनके सामने उनके नाम लिखो–

1. "मैं राफ़ेअ़ को पछाड़ सकता हूँ, मुझे भी लड़ाई में जाने दिया जाए।" ( )
2. "प्यारे नबी (सल्ल॰) का भेद किसी को मत बताना।" ( )
3. "साबित! अगर मैंने यह भेद किसी को बताया होता, तो तुमको ज़रूर बताता।" ( )

18

नबियों के हालात

हमारे प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के आख़ि रसूल हैं। आप (सल्ल॰) से पहले बहुत-से नबी और रसूल दुनिया में आ चु थे। रसूलों के बारे में कुछ बातें तुम पहले पढ़ चुके हो। अल्लाह के सब न और रसूल अच्छे और सच्चे थे। नेक थे और बुराइयों से पाक थे। स अल्लाह का पैग़ाम लाए। लोगों को सीधी राह दिखाई। अल्लाह का हुक सुनाया। उसकी मर्ज़ी पर चलकर दिखाया। भले कामों का हुक्म दिया अं बुरे कामों से रोका। आज दुनिया में जितनी भलाइयाँ पाई जाती हैं, वे स उन्हीं नबियों और रसूलों की कोशिशों का फल हैं।

नबियों और रसूलों की ठीक-ठीक संख्या तो अल्लाह ही को मालूम है हम कुछ के बारे में संक्षेप में बताते हैं :

(i) हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम)

सबसे पहले नबी हज़रत आदम (अलैहि॰) हैं। दुनिया में आप ही सब पहले इनसान भी हैं। दुनिया के सारे इनसान दादा आदम (अलैहि॰) ही क औलाद हैं, इसी लिए 'आदमी' कहलाते हैं।

दादा आदम को अल्लाह तआला ने मिट्टी से बनाया था। हम स लोग भी मिट्टी के बने हैं। बनाने के बाद अल्लाह ने उनके जिस्म में रू फूँकी। अब आप (अलैहि॰) चलने-फिरने और बोलने लगे। फिर अल्लाह आपको सिखाया-पढ़ाया। रहने-सहने का ढंग बताया। इल्म दिया, अक़

। फ़रिश्तों से भी बढ़कर दर्जा दिया। ज़मीन पर अपना ख़लीफ़ा बनाया र यहाँ का इन्तिज़ाम आपके सुपुर्द किया।

फ़रिश्तों को हुक्म दिया, "आदम को सजदा करो।"

सबने हुक्म मानकर सजदा कर लिया। इबलीस ने इनकार कर दिया। ; जिन्न था, फ़रिश्ता न था। जिन्न आग से बनाए गए हैं। इबलीस भी ग से बना था। अकड़कर बोला,

"मैं आग से बना हूँ। आदम मिट्टी से बने हैं। मैं आदम से बढ़कर । आदम को सजदा क्यों करूँ?"

इबलीस ने घमंड में आकर अल्लाह का कहा न माना। अल्लाह ने राज़ होकर उसे जन्नत से निकाल दिया। बदनसीब शैतान हमेशा के लिए नती हो गया।

फिर अल्लाह ने दादी हव्वा (अलैहि॰) को बनाया। दादा आदम से ाका ब्याह कर दिया। दोनों जन्नत में रहने लगे। ख़ूब मज़े से फिरते थे। चाहते थे, खाते थे। रब के गुण गाते थे।

जन्नत में एक पेड़ था। उस पेड़ के पास जाने से अल्लाह ने इन दोनों ; रोक दिया था। एक दिन शैतान आया। दोनों को बहकाकर उस पेड़ के स ले गया और उसका फल खिला दिया। अल्लाह की नाफ़रमानी करा । अल्लाह बहुत नाराज़ हुआ। उन दोनों को भी जन्नत से निकल जाने हुक्म दिया। दोनों को जब अपनी भूल-चूक मालूम हुई तो दोनों बहुत ए, बहुत गिड़गिड़ाए। अपने किए पर पछताने लगे। तौबा की। अल्लाह ाला से माफ़ी माँगी। अल्लाह बड़ा मेहरबान है, दोनों को माफ़ कर दिया। र दोनों ज़िन्दगी भर अल्लाह तआला के फ़रमाँबरदार रहे।

दादा आदम और दादी हव्वा के बहुत-से बच्चे हुए। उन्हीं की औलाद

फैलते-फैलते दुनिया के कोने-कोने में पहुँच गई है। उन्होंने अपने बाल-बच्
को भी अच्छी-अच्छी बातें सिखाईं। अल्लाह की मर्ज़ी पर चलाया। ब
दिनों के बाद उन दोनों ने इस दुनिया से कूच किया।

सलाम हो दादा आदम और दादी हव्वा पर!!

इस कहानी से हमने कई बातें सीखीं :

1. दुनिया के सारे इनसान, इन्हीं दादा आदम (अलैहि॰) की औल
हैं, जिनको अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों से सजदा कराया था। हमारा द
बहुत ऊँचा है। हम अल्लाह के ख़लीफ़ा (नायब) और सारी मख़लूक़
बढ़कर हैं। हमें अल्लाह के सिवा किसी और के सामने सिर न झुका
चाहिए। हम कैसे गवारा कर सकते हैं कि देवी-देवता, पहाड़, दरिया, पे
जानवर, अपने हाथों से बनाई हुई मूर्तियों या अपने जैसे ज़िन्दा या मु
इनसानों के सामने सिर झुकाकर हम अपने आपको ज़लील और अल्ल
तआला को नाराज़ करें।

2. दुनिया के सारे इनसान, चाहे वे किसी ज़ात-बिरादरी, क़ौम या न
के हों, सब एक ही माँ-बाप आदम और हव्वा (अलैहि॰) की औलाद
इसलिए सब आपस में भाई-भाई और एक-दूसरे के बराबर हैं। ज़ात-पा
छूत-छात, ऊँच-नीच वग़ैरह लोगों की मनगढ़न्त बातें हैं। सैयद, ब्राह्म
भंगी, चमार सब आदम की औलाद और एक समान इज़्ज़त के लायक़
यह अलग बात है कि कोई बुरी राह चलकर ख़ुद ही अपने को अल्लाह औ
बन्दों की नज़रों में ज़लील और रुसवा कर ले।

3. शैतान हमेशा हम सबके पीछे लगा रहता है और इसी ताक
रहता है कि कब बहला-फुसलाकर कोई बुरा काम करा दे, ताकि अल्ल

मसे नाराज़ हो जाए। कभी दोस्त बनकर आएगा और चिकनी-चुपड़ी बातें रके बहका देगा और कभी दिल के अन्दर घुसकर बुराई पर उकसाएगा। में इस दुश्मन से बहुत चौकन्ना रहना चाहिए।

4. नादानी में या शैतान के बहकावे में आकर अगर कभी भूल-चूक ा जाए तो पता चलते ही हमें अपनी भूल पर शर्मिन्दा होना चाहिए। ाल्लाह से गिड़गिड़ाकर माफ़ी माँगनी चाहिए। और फिर कभी उस बुराई ; पास भी नहीं फटकना चाहिए। बुराई पर जमे रहना और पता चल जाने र भी तौबा न करना शैतानी काम है। इससे हमें बचना चाहिए।

5. घमंड का सिर नीचा होता है। इबलीस ने घमंड किया, अपने आग बने होने पर अकड़ा रहा। अल्लाह के हुक्म को भी टाल दिया और दादा ादम को सजदा न किया। नतीजा यह हुआ कि हमेशा के लिए मरदूद हो या। आज हर शख़्स उसपर लानत भेजता है।

शब्दार्थ और टिप्पणी

ख़लीफ़ा	=	प्रतिनिधि, नायब
ज़लील	=	नीच, रुसवा, बदनाम
लानत	=	फटकार, धिक्कार

अभ्यास

क) ख़ाली जगहों को भरो :

1. आज दुनिया में जितनी.....पाई जाती हैं, वे सब उन्हीं नबियों और रसूलों की कोशिशों का फल हैं।

2. सबसे पहले नबी हज़रत.....(अलैहि॰) हैं।
3. हम सब लोग भी.....के बने हैं।
4. सारे इनसान एक ही माँ-बाप की.....हैं।
5. शैतान हमेशा.....के पीछे लगा रहता है।
6. बुराई पर जमे रहना.....काम है।
7. घमंड का सिर.....होता है।

(ख) नीचे कुछ बातें लिखी जा रही हैं। उनमें से जो बातें हज़रत आदम (अलैहि के बारे में हैं, उनके सामने **'आ'** और जो शैतान के बारे में हैं, उनके साम **'शै'** लिखो :

फ़रिश्तों ने अल्लाह के हुक्म से सजदा किया ( )
अल्लाह ने आग से बनाया ( )
ज़मीन में अल्लाह ने अपना ख़लीफ़ा बनाया ( )
घमंड में पड़कर अल्लाह का हुक्म न माना ( )
दादी हव्वा उनसे ब्याही गई थीं ( )
अपने आपको आदम (अलैहि॰) से बढ़कर समझा ( )
इल्म मिला, अक़्ल मिली, रहने-सहने का ढंग सीखा ( )
पहले नबी और पहले इनसान ( )
अल्लाह ने माफ़ कर दिया ( )
मरदूद ( )

(ii) हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम)

दादा आदम की औलाद फली-फूली। अनगिनत मर्द-औरत इधर-उधर
त गए। बहुत दिनों तक ये लोग नेक रहे। अल्लाह की मर्ज़ी पर चलते
। अल्लाह ने उनकी आल-औलाद और धन-दौलत में बरकत दी। शैतान
की घात में था। बराबर अपनी चालें चलता रहा। कुछ लोग उसके
कावे में आ गए। धीरे-धीरे बुराइयाँ बढ़ने लगीं। लोग अच्छी बातें भूल
। बुरे-बुरे काम करने लगे। जिन नेक बन्दों ने उन्हें सीधी राह दिखाई
, उन्हें भली बातें बताई थीं, उनके कहने पर तो चलना छोड़ दिया, उल्टे
के बुत बनाकर पूजने लगे। अल्लाह को छोड़कर देवी-देवताओं से मदद
ाने लगे।

जब बुराइयाँ बहुत बढ़ गईं, लोग एक-दूसरे को सताने और कमज़ोरों
ज़ुल्म ढाने लगे और हर तरफ़ बिगाड़ और फ़साद फैल गया तो अल्लाह
उनपर रहम आया। उन्हें सीधी राह दिखाने के लिए एक नबी भेजा,
नका नाम हज़रत नूह (अलैहि॰) था। हज़रत नूह (अलैहि॰) ने उन्हें बुराइयों
टोका। बुतों को पूजने से मना किया। अल्लाह की मर्ज़ी बताई। उसके
म पर चलकर दिखाया। मुद्दतों उन्हें अच्छी बातें बताते और बुरी बातों
रोकते रहे। मगर वे लोग बुराइयों में इतने लथपथ हो गए कि हज़रत नूह
लैहि॰) की अच्छी बातों पर कान ही नहीं धरते थे। हज़रत नूह (अलैहि॰)
आता देखते तो मुँह फेर लेते । कानों में उँगलियाँ डाल लेते। मुँह कपड़े
ढाँप लेते और किसी तरह अच्छी बातें सुनने पर आमादा न होते थे।
रत नूह (अलैहि॰) उन्हें अल्लाह के अज़ाब से डराते तो वे उनका मज़ाक़

उड़ाते और कहते कि तुम हम पर अल्लाह के अज़ाब क्यों नहीं ले आ
तौबा, तौबा! वे अल्लाह के अज़ाब को मामूली बात समझते थे।

अपनी दौलत और औलाद पर उन्हें बहुत घमंड था। वे इन्हें बुतों अ
देवी-देवताओं की देन समझते थे। अपनी ताक़त और चालाकी पर वे फ़
न समाते थे। नेक लोगों को नादान और ग़रीबों और कमज़ोरों को ब
ज़लील समझते थे। धीरे-धीरे वे हज़रत नूह और उनके अच्छे साथियों
जानी दुश्मन हो गए। उन्हें मार डालने की धमकी देने लगे। बहुत दिनों त
अल्लाह ने इन ज़ालिमों को ढील दी। मगर जब पानी सिर से ऊँचा हो ग
वे बुराइयों पर बराबर जमे रहे, संभलने और सुधरने की कोई उम्मीद न
रही तो हज़रत नूह (अलैहि॰) को भी उनके लिए बद्दुआ करनी पड़ी अ
अल्लाह ने उन्हें सख़्त सज़ा देने का फ़ैसला कर लिया।

अल्लाह तआ़ला ने हज़रत नूह (अलैहि॰) को एक बड़ी-सी कश्
बनाने का हुक्म दिया। आप अल्लाह के हुक्म से कश्ती बनाने लगे।
लोगों ने देखा तो आपका मज़ाक़ उड़ाने लगे। आपने सब्र किया और बरा
अपने काम में लगे रहे। कश्ती तैयार हो गई तो अल्लाह के हुक्म से आ
उसपर अपने अच्छे साथियों और जानवरों के एक-एक जोड़े को बिठा लिय

आख़िर अज़ाब का दिन आ गया। ज़मीन से पानी के चश्मे (सो
उबल पड़े। आसमान से मूसलाधार बारिश होने लगी। देखते-देखते च
तरफ़ पानी ही पानी हो गया। पानी की ऊँची-ऊँची लहरें उठने लगीं। स
साज़ो-सामान, घर-बार, आदमी, जानवर सब डूबने लगे। सब कुछ तहस-नह
होने लगा। हज़रत नूह (अलैहि॰) की कश्ती पानी पर तैरती रही। इसी दौ
एक जगह हज़रत नूह (अलैहि॰) का बेटा नज़र आया, बुरे लोगों की संग
में रहकर वह भी बिगड़ गया था। वह कश्ती में सवार नहीं हुआ था, बा
बाप की नाफ़रमानी करके बुरे लोगों में शामिल हो गया था। हज़रत

लैहि॰) ने उसे बुलाया कि वह तौबा करके कश्ती में आ जाए। मगर वह माना, बोला, "किसी पहाड़ पर चढ़ जाऊँगा।"

हज़रत नूह (अलैहि॰) ने समझाया, "आज कश्ती के सिवा कहीं पनाह मिलेगी।" मगर वह न माना। आख़िर पानी का एक रेला आया और वह डूब गया।

लगातार बारिश होती रही और चश्मे उबलते रहे। हर तरफ़ पानी ही नी नज़र आता था। पेड़, पहाड़ सब डूब गए थे। आख़िर अल्लाह के हुक्म पानी रुका। कश्ती जूदी पहाड़ पर ठहरी। अल्लाह ने कश्तीवालों को तो ा लिया, लेकिन दूसरे तमाम लोग अपने साज़ो-सामान सहित डूब गए। ी को झुठलाने, उसकी जान का दुश्मन बनने और उसकी बातों का ाक़ उड़ाने का यही नतीजा हुआ करता है।

न कहानी से हमने कई बातें सीखीं :

1. कोई शख़्स चाहे वह कितने ही अच्छे और बड़े बाप का बेटा बुरे काम करने पर अल्लाह की पकड़ और उसके अज़ाब से बच ें सकता। जब हज़रत नूह (अलैहि॰) जैसे नबी और अल्लाह के चहेते दे का बेटा न बच सका तो दूसरे किस गिनती में हैं। अल्लाह तआ़ला हर ु को उसके किए का बदला देता है। वह यह नहीं देखता कि किसका ा है या किसका बाप। यही सच्चा इनसाफ़ है।

2. अच्छे माँ-बाप के बेटों को भी बुरे साथी बिगाड़कर रख देते हैं। रत नूह (अलैहि॰) का बेटा बुरे लोगों के साथ रहा तो उन्हीं जैसा बुरा गया। हम कभी बुरे बच्चों के साथ रहकर अपना दीन और अपनी दुनिया ें बिगाड़ेंगे। हमेशा अच्छे लड़कों को अपना साथी बनाएँगे।

3. बुरे-भले कामों का पूरा-पूरा बदला तो आख़िरत (परलोक) मिलेगा, लेकिन कुछ बुरे कामों की कुछ सज़ा अल्लाह तआला दुनिया में दे देता है, ख़ासकर ज़ुल्म, घमंड और नबियों को झुठलाने की सज़ हज़रत नूह (अलैहि॰) की क़ौम अपने बुरे कामों की वजह से दुनिया में सज़ा से न बच सकी। वह तूफ़ान से तबाह हुई, ताकि लोग उनसे सब सीखें और बुराइयों से बचें। हम बुरे कामों से खुद भी दूर रहेंगे और दूस को भी बुराइयों से रोकेंगे।

4. जो लोग अल्लाह और उसके रसूल का कहा मानते और सच्चे द पर जमे रहते हैं, बुराइयाँ मिटाने और भलाइयाँ फैलाने की कोशिश क हैं, अल्लाह की राह में दुख झेलते और सब्र करते हैं, अल्लाह उनसे ख़ होता है और दुनिया में भी अज़ाब से उन्हें बचा लेता है और आख़िरत भी उनके लिए हर तरह की नेमतें हैं।

शब्दार्थ और टिप्पणी

फली-फूली	=	बढ़ी और फैली
धन	=	रुपये-पैसे, दौलत
घात में था	=	ताक में था, मौक़े की तलाश में था
बहकावा	=	बहकाना, धोखा देना
लोग बुराइयों में लथपथ हो गए	=	लोगों में बस बुराइयाँ ही बुराइ रह गईं
कान नहीं धरते थे	=	सुनते और मानते नहीं थे
आमादा होना	=	तैयार होना, राज़ी होना
फूले न समाना	=	बहुत ख़ुश होना
ढील देना	=	ग़लती की सज़ा में देर करना
पानी सिर से ऊँचा होना	=	ख़राबी बहुत ज़्यादा बढ़ जाना
तहस-नहस हो गया	=	तबाह और बर्बाद हो गया

अभ्यास

) ख़ाली जगहों को भरो :

1. अल्लाह तआ़ला हर एक को उसके किए का.....देता है।
2. बुरे कामों की कुछ.....अल्लाह तआ़ला दुनिया में भी दे देता है।
3. अच्छे माँ-बाप के बेटों को भी बुरे साथी.....कर रख देते हैं।
4. जो लोग अल्लाह और उसके रसूल का कहा मानते और सच्चे दीन पर जमे रहते हैं, अल्लाह उनसे.....होता है।

I) नीचे दो तरह के लोगों का उल्लेख है और उनके बारे में कुछ बातें लिखी गई जिसके बारे में जो बात है, उसका नम्बर (**क** या **ख**) उस बात के सामने लिखो :

) हज़रत नूह (अलैहि॰) **(ख)** हज़रत नूह (अलैहि॰) की क़ौम के बुरे लोग

ग़रीबों और कमज़ोरों को निहायत ज़लील समझते थे। ( )
आज कश्ती के सिवा कहीं पनाह न मिलेगी। ( )
बुराइयों में लथपथ हो गए थे। ( )
अल्लाह ने सीधी राह दिखाने और उसकी मर्ज़ी बताने के लिए भेजा। ( )
अच्छी बातें सुनने पर आमादा न होते थे। ( )
अपने सारे साज़ो-सामान के साथ ख़त्म हो गए। ( )
दौलत और औलाद पर घमंड करते थे। ( )
बुराइयों पर टोकते और बुतों को पूजने से मना करते थे। ( )
अज़ाब से डराने पर मज़ाक़ उड़ाते थे। ( )
. अल्लाह के हुक्म पर चलकर दिखानेवाले नेक बन्दों की मूर्ति बनाकर पूजने लगे। ( )

(iii) हज़रत इबराहीम (अलैहिस्सलाम)

हज़ारों साल पहले की बात है। यहाँ से दूर, बहुत दूर 'उर' नगर आज़र नाम का एक आदमी रहता था। आज़र बुत बनाकर बेचा करता थ उर नगर में बहुत-से मन्दिर थे। मन्दिरों में बुत रखे हुए थे। आज़र औ दूसरे लोग उन बुतों को पूजते थे और दुख-दर्द में उनसे मदद माँग थे।

आज़र के घर एक बच्चा पैदा हुआ। बच्चे का नाम इबराहीम र गया। इबराहीम बचपन ही से बहुत समझदार और नेक थे। वे लोगों बुत पूजते देखते तो उन्हें बड़ी हैरत होती थी। वे दिल-ही-दिल में सोच थे, "बुत लकड़ी और पत्थर के होते हैं, न खा सकते हैं, न पी सकते हैं, कुछ बोल सकते हैं, न किसी की सुन सकते हैं। उनपर मक्खि बैठती हैं तो उन्हें भगा नहीं सकते। फिर लोग आख़िर उन बुतों को क पूजते हैं? उनसे मुरादें क्यों माँगते हैं? वे बुत तो ख़ुद बेबस हैं। दूसरों बिगड़ी क्या बनाएँगे?"

इबराहीम (अलैहि॰) की क़ौम चाँद, सूरज और तारों को भी पूज थी। इबराहीम (अलैहि॰) ने उनमें भी कोई ऐसी बात नहीं पाई कि ख़ु समझकर उन्हें पूजा जाए। वे सब तो ख़ुद मजबूर और बेबस हैं। क निकलते, कभी डूबते हैं। उनके लिए जो रास्ता मुक़र्रर है, उसी पर चल के लिए मजबूर हैं। ऐसे मजबूर और बेबस भला कैसे ख़ुदा हो सकते हैं वे बोल पड़े,

"मेरा ख़ुदा तो वह है, जिसने इनको और सारी दुनिया को पैदा कि

जो सबको खिलाता-पिलाता और मारता-जिलाता है। उसके सिवा कोई ने के लायक़ नहीं।"

आख़िर अल्लाह ने हज़रत इबराहीम को नबी बनाया और लोगों को धी राह दिखाने का हुक्म दिया। आपने अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाना शुरू या। लोगों को बुराइयों से रोकने और भलाइयों का हुक्म देने लगे। लेकिन ग आपकी अच्छी और सच्ची बातें मानने के बजाय आपके दुश्मन हो ए।

एक दिन हज़रत इबराहीम ने अपने बाप आज़र से यही बातें कहीं। ह सुनकर बहुत नाराज़ हुआ। बेटे को बुरा-भला कहा और उन पर सख़्ती रू कर दी। उन्होंने दूसरों को भी यही बातें समझाईं, लेकिन मानने के ाय लोग उल्टे आप पर ही ख़फ़ा होने लगे। वे लोग आपकी सीधी-सच्ची त यह कहकर ठुकरा देते थे कि जिन बुतों को हमारे बाप-दादा पूजते चले ाए हैं और जिन्हें पूरी क़ौम पूजती है, हम भला कैसे छोड़ दें?

आख़िर हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) ने उन्हें समझाने की एक और रकीब सोची। मेले का दिन था। नगर के तमाम लोग, मर्द-औरतें, बच्चे-ढ़े, सब मेला देखने चले गए। हज़रत इबराहीम अकेले रह गए। आपने क कुल्हाड़ी ली। बुतों के पास गए। एक-एक करके सबको तोड़ दिया, र्फ़ एक बड़े बुत को छोड़ दिया और कुल्हाड़ी उसके गले में लटका दी।

लोगों ने वापसी पर जब अपने बुतों का यह हाल देखा तो बहुत बिगड़े। ता लगाने लगे कि यह हरकत किसकी है? कुछ लोगों ने हज़रत इबराहीम ा नाम लिया। वे बुलाए गए। पूछने पर आपने जवाब दिया कि शायद मों किसी बात पर लड़ाई हुई हो और बड़े बुत ने ख़फ़ा होकर उनकी यह त बनाई हो। अगर बता सकते हों तो इन बुतों ही से पूछ देखो।

लोगों ने कहा कि तुम तो जानते हो, कहीं बुत भी बोलते हैं?

अब हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) को अपनी बात बताने का अच्छा मौक़ा मिल गया। बोले, "जब ये बुत न तो बोल सकते हैं, न चल-फिर सकते हैं, न नफ़ा-नुक़सान पहुँचा सकते हैं, हद यह कि ये अपना बचाव नहीं कर सकते तो फिर तुम इन्हें क्यों पूजते हो?" यह सुनकर लोग शर्मिन्दा तो हुए, मगर इस सच्ची बात को मानने के लिए तैयार न हुए, बल्कि हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) को सख़्त सज़ा देने की ठानी। आपको ज़िन्दा जला देने के लिए आग का एक बड़ा-सा अलाव तैयार किया गया। हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) को उसमें डाल दिया गया। लेकिन अल्लाह के हुक्म से आग ठंडी हो गई। इबराहीम (अलैहि॰) का बाल भी बाँका न हुआ।

जब उन लोगों के सुधरने की कोई उम्मीद न रही तो हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) घर-बार छोड़कर वहाँ से चल पड़े। चलते-चलते वतन से बहुत दूर निकल गए। बुढ़ापे में अल्लाह ने आपको दो बेटे दिए। एक का नाम इसमाईल था, दूसरे का इसहाक़। ये दोनों भी मशहूर नबी हुए हैं।

आप इसमाईल (अलैहि॰) और उनकी माँ हज़रत हाजरा को एक ऐसे रेतीले मैदान में छोड़ आए, जहाँ न तो पानी था और न हरियाली थी। अल्लाह के हुक्म से वहाँ ज़मज़म का चश्मा फूट पड़ा। लोग उसके आस-पास बसने लगे। धीरे-धीरे एक बहुत बड़ा शहर मक्का आबाद हो गया।

अब इसमाईल (अलैहि॰) जवान हुए। इबराहीम (अलैहि॰) ने एक अजीब ख़्वाब देखा कि आप अपने जवान बेटे को अपने हाथ से ज़बह कर रहे हैं। आपने इसे अल्लाह का हुक्म समझा। बेटे से ख़्वाब बयान किया। बेटा क़ुरबान होने के लिए तैयार हो गया। बोला, "आप अल्लाह का काम ज़रूर कीजिए।" इबराहीम (अलैहि॰) क़ुरबानी करने लगे तो अल्लाह

ारत इसमाईल (अलैहि॰) को बचा लिया और बाप-बेटे दोनों की इस भारी रबानी से बहुत ख़ुश हुआ। हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) को तमाम दुनिया सरदारी अता की। हज़रत इसमाईल (अलैहि॰) को भी नबी बना दिया। इन्दा के लिए बेटे की क़ुरबानी की बजाय जानवर की क़ुरबानी के लिए ा। इसी वाक़िए की याद में हम हर साल क़ुरबानी करते हैं और अपने इरादे को दोहराते हैं कि ज़रूरत पड़ी तो अल्लाह के हुक्म पर हम जान क़ुरबान कर देंगे।

अल्लाह के हुक्म से अब बाप-बेटे ने मिलकर काबा बनाया। अल्लाह पाक घर, काबा मक्का में है। सारी दुनिया के मुसलमान काबा की तरफ़ करके नमाज़ पढ़ते और वहीं हज के लिए जाते हैं।

स कहानी से हमने कई बातें सीखीं :

1. अल्लाह की राह में अपना घर-बार, जान-माल, आल-औलाद सब छ क़ुरबान कर देने के लिए तैयार रहना चाहिए। हज़रत इबराहीम लैहि॰) को जिस चीज़ की क़ुरबानी करने का आदेश हुआ, आप (अलैहि॰) के लिए ख़ुशी से तैयार हो गए।

2. अल्लाह अपने बन्दों को अच्छी तरह आज़माता है। जो बन्दा स्तिहान में पूरा उतरता है, उसी को ऊँचा दर्जा देता है। हज़रत इबराहीम लैहि॰) हर इम्तिहान में पूरे उतरे, इसी लिए अल्लाह तआ़ला ने उन्हें इतना चा दर्जा दिया कि सारी दुनिया का सरदार बनाया।

3. जो लोग अल्लाह पर भरोसा करते हैं, क़दम-क़दम पर अल्लाह की मदद करता है। उनको मायूस या तबाह होने नहीं देता। हज़रत राहीम (अलैहि॰) ने हमेशा अल्लाह पर भरोसा किया और हर जगह ल्लाह ने उनकी मदद की।

4. अल्लाह का हुक्म न हो तो बड़े से बड़ा दुश्मन भी बाल बाँका न कर सकता। हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) की क़ौम ने आप (अलैहि॰) नुक़सान पहुँचाने में कोई कसर उठा नहीं रखी, मगर आपका कुछ न बिग सकी।

शब्दार्थ और टिप्पणी

मुरादें माँगना	=	दुआएँ माँगना, मतलब पूरा होने की प्रार्थना कर
तरकीब	=	उपाय, ख़ास ढंग से किसी चीज़ के बारे में सोच
ठानी	=	तय किया, पक्का इरादा किया
बाल बाँका न होना	=	कोई तक़लीफ़ न पहुँचना, ज़रा भी कष्ट न हो
चश्मा	=	सोता, स्रोत
वाक़िआ	=	घटना

अभ्यास

(क) उत्तर दो :

1. बुतों के बारे में हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) क्या सोचते थे?
2. बुतों को तोड़कर हज़रत इबराहीम ने अपनी क़ौम को क्या ब समझाई?
3. आग ने हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) को क्यों नहीं जलाया?
4. हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) को उर शहर क्यों छोड़ना पड़ा?
5. हज़रत इसमाईल (अलैहि॰) और उनकी माँ को हज़रत इबराह (अलैहि॰) कहाँ छोड़ आए?

6. हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) ने अपने ख़्वाब को पूरा करने के लिए क्या किया?

7. हम हर साल क़ुरबानी करके किस इरादे को दोहराते हैं?

) ख़ाली जगहों को भरो :

1. हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) के बाप का नाम.....था।

2. हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) की क़ौम चाँद, सूरज और तारों को भी .....थी।

3. हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) को अल्लाह तआ़ला ने पूरी दुनिया की .....सौंपी।

4. सारी दुनिया के मुसलमान.....की तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ते हैं और यहीं.....के लिए जाते हैं।

5. हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) हर.....में पूरे उतरे।

6. अल्लाह का हुक्म न हो तो बड़े-से-बड़ा दुश्मन भी.....बाँका नहीं कर सकता।

कुछ और काम

जो लोग हज करके वापस आए हैं, उनमें से किसी से हज के बारे में मालूमात हासिल करो।

19

क़ुरआन मजीद

अल्लाह तआ़ला ने सबको पैदा किया। वह बड़ा मेहरबान है उसने हमारे रहने-बसने के लिए लम्बी-चौड़ी ज़मीन बनाई। ज़मीन सारी चीज़ें हमारे लिए बनाईं। ज़मीन पर हमको अपना ख़लीफ़ा (नाय बनाया।

अल्लाह की ज़मीन पर हम कैसे रहें और उसकी दी हुई चीज़ों को वे काम में लाएँ? इसका ढंग भी उसने बताया। रहनुमाई के लिए उसने न और रसूल भेजे। रसूल अल्लाह की किताबें लेकर आए। इन किताबों अल्लाह के फ़रमान होते थे, ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा होता था। सब आख़िर में प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तशरी लाए। आप (सल्ल॰) पर अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआन मजीद उतारा। उ इनसानों के पास अल्लाह की यही आख़िरी किताब है, जो अपनी अस हालत में मौजूद है। इससे पहले की किताबों को लोगों ने या तो गुम क दिया या उनमें इधर-उधर की बातें मिला दीं। क़ुरआन मजीद की हिफ़ाज़ की ज़िम्मेदारी ख़ुद अल्लाह तआ़ला ने ली है। अल्लाह की मर्ज़ी मालूम क के लिए यही एक प्यारी किताब रह गई है। इसमें दुनियावालों के लि अल्लाह की हिदायतें हैं। नबियों के क़िस्से हैं। अल्लाह के फ़रमाँबरदार बन के लिए ख़ुशख़बरी है। नाफ़रमानों के लिए डरावा है। इस प्यारी किताब ज़बान अरबी है। इसमें हमारे लिए बहुत अच्छी-अच्छी नसीहतें हैं। नीचे चु आयतों के तर्जुमे दिए जाते हैं। देखो, कितनी प्यारी बातें हैं :

अल्लाह के सिवा कोई माबूद (उपास्य) नहीं है। सिर्फ़ उसी की बन्दगी और इबादत करो।

अल्लाह के रसूल की ज़िन्दगी तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना है।

अल्लाह और उसके रसूल का कहा मानो।

माँ-बाप के साथ भलाई करो।

अपनी जान और अपने माल से अल्लाह की राह में जिहाद करो।

सारे मुसलमान भाई-भाई हैं। अगर लड़ाई-झगड़ा हो जाए तो भाइयों में मेल करा दो।

अल्लाह के नज़दीक तुममें सबसे ज़्यादा इज़्ज़तवाला वह है, जो सबसे ज़्यादा अल्लाह से डरनेवाला है।

झूठ बोलने से बचो।

वादा पूरा करो। बेशक वादे के बारे में पूछ-ताछ होगी।

). आपस में गाली-गलौज न करो और न (किसी को) बुरे नामों से चिढ़ाओ।

.. किसी की टोह में न रहो और न एक-दूसरे की ग़ीबत करो।

!. नेक कामों में साथ दो और बुरे कामों में साथ न दो।

3. तुम बेहतरीन उम्मत हो। तुम्हें लोगों को सीधी राह दिखाने के लिए उठाया गया है।

4. अल्लाह ख़ूब पाक-साफ़ रहनेवालों को पसन्द करता है।

कुरआन मजीद में जगह-जगह बड़ी अच्छी-अच्छी दुआएँ हैं। हम सब ल्लाह के मोहताज हैं। उसी का दिया हम खाते हैं। उसकी बड़ी मेहरबानी कि उसने हमें ये दुआएँ सिखा दी हैं। हम हाथ फैलाकर नीचे लिखी हुई आएँ अक्सर माँगते रहते हैं :

1. رَبِّ زِدْنِیْ عِلْماً

रब्बि ज़िदनी इल्मा

"ऐ मेरे रब! मुझको ज़्यादा इल्म दे।"

2. رَبَّنَا اٰتِنَا فِیْ الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِیْ الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

रब्बना आतिना फ़िद्दुनिया ह-स-न-तँव व फ़िल आख़िरति ह-स-न-तँ व क़िना अज़ाबन्नार।

"ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भी भलाई दे और आख़िरत में भलाई दे और हमें दोज़ख़ (नरक) के अज़ाब से बचा।"

3. رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِیْ صَغِيْرًا

रब्बिर-हम-हुमा कमा रब्बयानी सग़ीरा।

"ऐ मेरे रब! इन (माँ-बाप) पर रहम फ़रमा, जिस तरह प्यार-मुहब्ब से इन्होंने मुझे बचपन में पाला था।"

दुआएँ माँगने का तरीक़ा भी जब उसी ने हमें सिखाया है औ देनेवाला भी वही है, तो फिर उसकी देन का क्या ठिकाना, जो कुछ दे कम है। हमें अल्लाह से ज़्यादा-से-ज़्यादा दुआएँ माँगते रहना चाहिए, ता किसी और के सामने हाथ फैलाकर ज़लील न होना पड़े।

ऐ अल्लाह! हमपर अपना फ़ज़्ल फ़रमा।

शब्दार्थ और टिप्पणी

टोह में रहना = ख़ामियों और कमज़ोरियों की तलाश में रहना, ऐब तलाश करने में लगे रहना।

ग़ीबत = पीठ पीछे किसी की बुराई बयान करना

अभ्यास

क) संक्षेप में उत्तर दो :

1. ज़मीन पर इनसान की हैसियत क्या है?
2. अल्लाह ने इनसान की रहनुमाई के लिए क्या इंतिज़ाम किया है?
3. अल्लाह की कौन-सी किताब अब तक असली हालत में मौजूद है?
4. क़ुरआन मजीद किस ज़बान में है? और किस पर उतरा?
5. क़ुरआन मजीद में क्या बातें बयान की गई हैं?
6. अल्लाह के नज़दीक इनसानों में बड़ा और इज़्ज़त के क़ाबिल कौन है?
7. ज्ञान में वृद्धि के लिए क़ुरआन ने कौन-सी दुआ सिखाई है?
8. माँ-बाप के लिए कौन-सी दुआ करने का हुक्म क़ुरआन में आया है?

ख) ख़ाली जगहों को भरो :

1. अल्लाह ने ज़मीन पर हमको अपना.....बनाया है।
2. इनसानों के पास अल्लाह की यही आख़िरी किताब है जो अपनी..... .....हालत में मौजूद है।
3. क़ुरआन में फ़रमाँबरदार बन्दों के लिए.....है और नाफ़रमानों के लिए डरावा है।

4. .....के सिवा कोई माबूद नहीं है।
5. अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की ज़िन्दगी तुम्हारे लिए बेहतरीन.....
6. माँ-बाप के साथ.....करो।
7. सारे.....भाई-भाई हैं।
8. वादा पूरा करो। बेशक वादे के बारे में.....होगी।
9. नेक कामों में साथ दो और.....कामों में साथ न दो।
10. अल्लाह ख़ूब पाक-साफ़ रहनेवालों को.....करता है।
11. तुम बेहतरीन.....हो, तुम्हें लोगों को सीधी राह दिखाने लिए उठाया गया है।

कुछ और काम

1. क़ुरआनी दुआएँ याद करो। हर नमाज़ के बाद ये दुआएँ ज़रूर किया कर

हदीस शरीफ़

प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के ख़िरी रसूल हैं। अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्ल॰) को इनसानों की ायत के लिए भेजा था। आप (सल्ल॰) ने अल्लाह का पैग़ाम सुनाया। को सीधी राह दिखाई। दुनियावालों को अल्लाह की मर्ज़ी बताई। लाह के हुक्मों पर चलकर दिखाया। आप (सल्ल॰) ही की पैरवी करने हम सबकी नजात है।

आपने जो कुछ कहा, आपने जो कुछ किया, आपने जिन कामों पर ा, आपने जिन कामों को सराहा, आपने जिन बातों का हुक्म दिया, ने जिन-जिन बातों से रोका, आपने अदब-सलीक़े की जो-जो बातें ाईं, उनको हदीस कहते हैं। आपके प्यारे साथियों ने वे सब याद कर और बड़ी एहतियात से उन्हें महफ़ूज़ रखा। दूसरों तक पहुँचाया। हमारे गों ने इन्हें ख़ुद भी याद कर लिया और सबके लिए किताबों में भी लिख ा। ये बातें हमारे लिए बहुत फ़ायदेमन्द हैं। क़ुरआन मजीद के बाद सों ही का दर्जा है, क्योंकि ये सब भी आपने अल्लाह ही के हुक्म से ा या कहा था।

हम मुसलमान हैं। हम क़ुरआन और हदीस का बहुत अदब करते हैं। इन्हें ग़ौर से पढ़ते और सुनते हैं। इनके हुक्मों पर चलते हैं। इसी में हम की भलाई है। हदीसें अरबी ज़बान में हैं। नीचे कुछ हदीसों का तर्जुमा ा जा रहा है। देखो, कितनी प्यारी और हमारे लिए कितनी फ़ायदेमन्द ं हैं :

1. बच्चे जन्नत के फूल हैं।
2. बाप का अपनी औलाद के लिए सबसे अच्छा तोहफ़ा उन अच्छी तालीम व तरबियत है।
3. जन्नत तुम्हारी माँओं के क़दमों तले है।
4. सबसे अच्छा सदक़ा (दान) यह है कि तू किसी भूखे को पेट खिलाए।
5. घमंड करनेवाला या झूठी शेख़ी बघारनेवाला जन्नत में दाख़िल होगा।
6. गन्दी बात कहनेवाला और उस गन्दी बात को फैलानेवाला दो बराबर के गुनहगार हैं।
7. चुग़ली खानेवाला जन्नत में नहीं जाएगा।
8. तुममें बेहतर वह है, जिसके अख़लाक़ बेहतर हों।
9. तुममें बेहतर वह है, जिसने क़ुरआन पढ़ा और पढ़ाया।
10. नमाज़ मेरी आँखों की ठंडक है।
11. बाज़ार में खाना हल्केपन की निशानी है।

प्यारे नबी ने मना फ़रमाया है :

1. दाएँ हाथ से इस्तिंजा करने से।
2. पीने के बरतन में फूँक मारने से।
3. खड़े होकर खाने-पीने से।
4. झूठ बोलने से।
5. सूराख़ के अन्दर पेशाब करने से।
6. जानवरों को तकलीफ़ देने से।
7. टेक लगाकर खाने से।
8. रास्ते पर पेशाब-पाख़ाना करने से।
9. पाख़ाना-पेशाब करते के वक़्त काबे की तरफ़ मुँह करके बैठने

अभ्यास

) संक्षेप में उत्तर दो :

1. बाप का अपनी औलाद के लिए सबसे अच्छा तोहफ़ा क्या है?
2. सबसे अच्छा सदक़ा कौन-सा है?
3. गन्दी बात कहनेवाले और गन्दी बात को फैलानेवाले किस बात में बराबर हैं?

) ख़ाली जगहों को भरो :

1. प्यारे नबी (सल्ल॰) ही की पैरवी करने में हम सबकी.....है।
2. क़ुरआन मजीद के बाद हदीसों ही का.....है।
3. जन्नत तुम्हारी माँओं के.....तले है।
4. तुम में बेहतर वह है, जिसके.....बेहतर हों।
5. बच्चे.....के फूल हैं।

) प्यारे नबी (सल्ल॰) ने कुछ बातों के करने का हुक्म दिया है और कुछ बातों से मना किया है। नीचे कुछ बातें लिखी जा रही हैं। जिन बातों के करने का हुक्म दिया गया है, उनके सामने **हुक्म** और जिन बातों से मना किया गया है, उनके सामने **मना** लिखो :

1. औलाद की अच्छी तालीम और तरबियत ( )
2. घमंड करना और शेख़ी बघारना ( )
3. गन्दी बात कहना और फैलाना ( )
4. चुग़ली खाना ( )
5. क़ुरआन पढ़ना और पढ़ाना ( )

6. सूराख़ के अन्दर पेशाब करना ( )
7. भूखों को खाना खिलाना ( )
8. दाएँ हाथ से इस्तिंजा करना ( )
9. जानवरों को तकलीफ़ पहुँचाना ( )
10. झूठ बोलना ( )
11. टेक लगाकर खाना ( )

कुछ और काम

1. मौक़ा मिले तो किसी भूखे को खाना खिलाओ।

1

अदब और सलीक़े की बातें

हम मुसलमान हैं। हमारे प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने दब-सलीक़े की जितनी बातें बताई हैं, हम उन सबपर अमल करते हैं। न ा ख़ुद बेअदबी करते हैं और न बेअदब और बदसलीक़ा लड़कों को पसन्द रते हैं। इसी लिए हमें सब लोग बाअदब और सलीक़ामन्द समझते हैं। दब और सलीक़े का ख़्याल रखने से अल्लाह और रसूल ख़ुश होते हैं और ाम लोग भी प्यार करते हैं। नीचे लिखी हुई बातों का तो हम ख़ास तौर ख़्याल रखते हैं:

1. हर काम 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' पढ़कर शुरू करते हैं। खाना-पीना , पढ़ना-लिखना हो, ग़रज़ कोई काम करना हो, हम बिस्मिल्लाह ज़रूर कह ते हैं। इससे बड़ी बरकत होती है।

2. सलाम करना हम कभी नहीं भूलते। पहले सलाम करते हैं, फिर तें। सुबह सोकर उठते हैं तो घर के तमाम लोगों को सलाम करते हैं। स्जिद जाते हैं तो सलाम करके दाख़िल होते हैं। मदरसे में अपने मोह्तरम ातादों और मदरसे के साथियों को सलाम करते हैं। दर्जों और दफ़्तरों में लाम करके जाते और सलाम ही करके वापस आते हैं। सलाम करने में ा ही पहल करते हैं। इसमें सवाब ज़्यादा मिलता है और तमाम लोग हमसे ार करते हैं और हमें दुआएँ देते हैं।

3. तन पाक तो मन पाक, इसी लिए हम सफ़ाई-सुथराई का बहुत ाल रखते हैं। पेशाब या पाख़ाने के बाद आबदस्त लेते हैं। फिर साबुन मिट्टी मल-मलकर अच्छी तरह पानी से हाथ धोते हैं।

4. घर के आस-पास या गली-कूचे और रास्ते में हम कभी पाख़ाना-पेश नहीं करते। हमेशा लैट्रिन में या अलग-थलग कहीं आड़ में करते हैं। वु गन्दे बच्चे घर के पास गली-कूचे या रास्ते में बैठ जाते हैं। रास्ता चलनेवा को कितनी तकलीफ़ होती है। उनके जूते और कपड़े नापाक हो जाते हैं हर एक लानत-मलामत करता और जली-कटी सुनाता है। ऐसी हरक करके हम लोगों को क्यों दुख पहुँचाएँ और अल्लाह, उसके फ़रिश्तों औ सारे लोगों की लानत मोल लें।

5. खाना हम दाएँ हाथ से खाते हैं और पाख़ाना, पेशाब या गन्द बाएँ हाथ से साफ़ करते हैं। जिस हाथ से खाना उसी से पाख़ाना सा करना, भला हम कैसे गवारा कर सकते हैं, इधर-उधर नाक भी न छिनकते, न दामन और आस्तीन में पोंछते हैं, बल्कि एक तरफ़ जाकर ब हाथ से साफ़ करते हैं।

कुछ गन्दे लड़के जहाँ देखो थूकते हैं, नाक छिनक देते हैं, जब दे नाक में उँगली डालते या दाँतों से नाख़ून कुतरते रहते हैं। यह फूहड़पन हम इन गन्दी बातों से बचते हैं।

6. किसी को पानी पेश करना हो या कोई और चीज़ देनी हो तो ह दाएँ हाथ से देते हैं और अगर कोई हमें कुछ दे रहा हो तो हम दाएँ ह ही से लेते हैं।

7. हमारे बड़े जब हमें पुकारते हैं तो हम 'जी' कहकर जवाब देते हैं पास जाकर अदब से खड़े होते हैं। बात को ग़ौर से सुनते हैं। वे जो हु देते हैं उसे पूरा करते हैं। कोई भेद की बात हो तो हम किसी दूसरे से न कहते। दो आदमी बातें कर रहे हों तो हम वहाँ से हट जाते हैं। खड़े हो सुनने की कोशिश नहीं करते। कोई कुछ बोल रहा हो तो हम बात न

टते, न बीच में बोल पड़ते हैं। बड़ों का नाम लेना हो तो नाम से पहले नाब' या नाम के बाद में 'साहब' लगाते हैं।

8. प्यारे नबी (सल्ल॰) का नाम आए तो दुरूद-सलाम भेजते हैं। दूसरे यों का नाम भी हम बहुत अदब से लेते हैं। नाम से पहले 'हज़रत' और ; में 'अलैहिस्सलाम' ज़रूर कहते हैं। प्यारे नबी (सल्ल॰) के साथियों और रे बुज़ुर्गों का नाम भी हम बहुत अदब से लेते हैं। सहाबा (रज़ि॰) के नाम साथ 'रज़ियल्लाहु अन्हु' और दूसरे बुज़ुर्गाने-दीन का नाम आने पर मतुल्लाह अलैहि' कहते हैं।

9. किसी के घर जाना हो तो हम बेधड़क नहीं घुस जाते, न दरवाज़े खिड़की से अन्दर झाँकते हैं, बल्कि दरवाज़े पर जाकर एक तरफ़ हटकर ; हो जाते हैं। घरवालों को सलाम करते हैं, फिर अन्दर आने की इजाज़त गते हैं। इजाज़त मिल जाती है तो अन्दर जाते हैं वरना लौट आते हैं। तो अपने घर में भी सलाम करके दाख़िल होते हैं, ताकि हमारे आने का ाको पता चल जाए। न जाने घर में कौन किस हाल में हो।

10. हम सब भाई-बहन मिल-जुलकर खाना खाते हैं। हाथ-मुँह धोकर ीक़े से खाने बैठते हैं। 'बिस्मिल्लाह' करके शुरू करते हैं। एक ही बरतन खा रहे हों तो अपने-अपने सामने से खाते हैं। खाना हमेशा हम दाएँ हाथ खाते हैं। खाना हम बड़े शौक़ से खाते हैं। किसी खाने को बुरा नहीं ते। खाते समय पानी पीना हो तो बाएँ हाथ से गिलास पकड़ते और दाएँ थ से उसे सहारा देकर आहिस्ता-आहिस्ता तीन साँस में पीते हैं। खाना कर अच्छी तरह हाथ-मुँह धोते, कुल्ली करते हैं और अल्लाह का शुक्र ा करते हैं।

अभ्यास

(क) उत्तर दो :

1. सलाम करने में हमें पहल क्यों करनी चाहिए?
2. दो आदमी जब बातें कर रहे हों, तो हमें क्या करना चाहिए?
3. नबियों के नामों से पहले और बाद में हमें क्या कहना चाहिए?
4. किसी के घर जाने का क्या तरीक़ा है?
5. हम अपने घर में दाख़िल होने से पहले सलाम क्यों करते हैं?
6. खाने के दौरान पानी पीने का क्या तरीक़ा है?

(ख) ख़ाली जगहों को भरो :

1. हम काम बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़कर.....करते हैं।
2. सुबह सोकर उठते हैं तो घर के तमाम लोगों को.....करते
3. खाना हम.....हाथ से खाते हैं।
4. अगर कोई हमें कुछ दे रहा हो तो हम.....हाथ ही से लेते हैं
5. कोई.....की बात हो तो हम किसी दूसरे से नहीं कहते।
6. .....के नाम के बाद हम 'रज़ियल्लाहु अन्हु' कहते हैं।
7. एक ही बरतन में खा रहे हों तो अपने-अपने.....से खाते
8. खाना खाकर अल्लाह का.....करते हैं।

(ग) सही वाक्य पर (√) और ग़लत पर (×) का निशान लगाओ :

1. सलाम करने में पहल नहीं करनी चाहिए।
2. सुबह सोकर उठने पर घर के तमाम लोगों को सलाम करना अच्छा
3. भेद की बात दूसरों को बता देनी चाहिए।
4. किसी के घर जाना हो तो बेधड़क घुस जाना चाहिए।
5. नाक में उँगली डालना या हर जगह नाक छिनकना फूहड़पन है।
6. तन पाक तो मन पाक।

22

मुस्लिम बच्चा

हरदम नेकी करनेवाला
अपने रब से डरनेवाला
कितना अच्छा मुस्लिम बच्चा

जब मुँह खोले सच ही बोले
बाद को बोले पहले तोले
कितना अच्छा मुस्लिम बच्चा

चोरी, चुग़ली, गाली, ग़ीबत
इन बातों से रक्खे नफ़रत
कितना अच्छा मुस्लिम बच्चा

दुखियारों के काम आता है
बेचारों के काम आता है
कितना अच्छा मुस्लिम बच्चा

हक़ छोटों का वह पहचाने
और बड़ों का कहना माने
कितना अच्छा मुस्लिम बच्चा

रोज़ नमाज़ें पढ़ता है वह
दिन-दिन आगे बढ़ता है वह
कितना अच्छा मुस्लिम बच्चा
सच्चे दीन का जाननेवाला
रब की बातें माननेवाला
कितना अच्छा मुस्लिम बच्चा

3

अच्छी आदतें

'मुस्लिम बच्चा' के शीर्षक से जो कविता हमने पढ़ी है, उसमें वे सब च्छी बातें बयान की गई हैं जो एक मुस्लिम बच्चे में पाई जाती हैं।

म मुसलमान बच्चे :

खुद भी भलाई के काम करते हैं और दूसरे बच्चों को भी भले काम के लिए कहते रहते हैं।

हम हमेशा अल्लाह से डरते रहते हैं और किसी बुरे काम के पास भी नहीं फटकते। हम जानते हैं कि अल्लाह सब कुछ जानता है। हमारा कोई काम उससे छिपा नहीं है। बुरे काम करेंगे तो वह बहुत ही सख़्त सज़ा देगा।

हम हमेशा सच बोलते हैं। भूलकर भी झूठ नहीं बोलते। भूल-चूक हो जाए तो अपना क़ुसूर मान लेते हैं।

किसी से कोई वादा कर लें तो उसे पूरा करते हैं। चाहे ऐसा करने में हमें कितना ही नुक़सान हो।

जो करते हैं, वही कहते हैं। कभी डींग नहीं मारते। गाली नहीं देते, कभी किसी की चुग़ली नहीं खाते, न किसी का दिल दुखाते हैं।

बिना पूछे किसी की कोई चीज़ नहीं लेते।

लँगड़े, लूले, अंधे, मोहताज, बीमार और कमज़ोर की मदद करते हैं।

अपने छोटे भाई-बहनों और मदरसे के छोटे बच्चों की भोली बातें

सुनकर ख़ुश होते हैं, उनसे प्यार करते हैं, खाने-पीने और खेल-कूद उन्हें शरीक करते हैं। उनकी ग़लतियों पर मारते-पीटते नहीं, बल्कि प्यार से समझा देते हैं और माफ़ कर देते हैं।

9. हमारी प्यारी अम्मी जान और हमारे अच्छे अब्बा जान ने हमें बहु मुहब्बत से पाला-पोसा है। हमारे अच्छे उस्ताद ने हमें पढ़ाया-लिखा और अच्छी-अच्छी बातें सिखाई हैं। उन सबके हम पर बड़े एहसान हैं। हम हमेशा उनकी ख़िदमत करते हैं, उनका कहा मानते हैं और उनकी इज़्ज़त करते हैं। हमारे बड़े हमसे बहुत ख़ुश रहते हैं। हम उन्हें कभी नाराज़ नहीं करते।

10. अल्लाह के हम पर बेहद एहसानात हैं। हम उसका शुक्र अदा करते और पाबंदी से नमाज़ पढ़ते हैं। प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम) ने हमें सीधी राह दिखाई है। आप न होते तो हम भटव फिरते। हम अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल॰) की बातों को ध्यान सुनते और उनपर अमल करते हैं। हम इन्हें अपने माँ-बाप से भी ज़्या चाहते हैं।

हमें ये सारी बातें हमारे सच्चे दीन 'इस्लाम' ने सिखाई हैं। ह मुसलमान हैं, इस्लाम की सीधी-सच्ची बातों पर चलते हैं।

अभ्यास

) संक्षेप में उत्तर दो :

1. बुरे काम करेंगे तो अल्लाह तआ़ला क्या करेगा?
2. हमें किन लोगों की मदद करनी चाहिए?
3. छोटों से ग़लती होने पर हमें क्या करना चाहिए?
4. माँ-बाप और उस्ताद की ख़िदमत क्यों करनी चाहिए?
5. हम किन्हें माँ-बाप से ज़्यादा चाहते हैं?

) ख़ाली जगहों को भरो :

1. हम हमेशा.....से डरते रहते हैं और किसी बुरे काम के पास भी नहीं फटकते।
2. हम हमेशा.....बोलते हैं। भूलकर भी झूठ नहीं बोलते।
3. भूल-चूक हो जाए तो अपना.....मान लेते हैं।
4. हम किसी से.....कर लें, तो उसे पूरा करते हैं।
5. प्यारे नबी (सल्ल॰) ने हमें.....राह दिखाई है। आप न होते तो हम भटकते फिरते।
6. हम.....हैं, मुसलमान इस्लाम की सीधी-सच्ची बातों पर चलते हैं

24

क़ुरआन मजीद पढ़ने के क़ायदे

क़ुरआन मजीद अल्लाह की पाक किताब है। अल्लाह ने यह पा किताब प्यारे नबी (सल्ल॰) के हाथ भेजी है। यह किताब हमें ज़िन्द गुज़ारने का तरीक़ा बताने के लिए आई है। हम पाबन्दी से इस 'तिलावत' करते हैं।

तिलावत के आदाब

क़ुरआन मजीद की तिलावत में हम कई बातों का ख़याल रखते है

1. सबसे पहले पाक-साफ़ होकर वुज़ू करते हैं।
2. क़ुरआन पाक की हम बेहद इज़्ज़त करते हैं। बहुत अदब से उठ हैं और दोनों हाथों से ख़ूब मज़बूत पकड़ते हैं, ताकि गिरने का डर रहे।
3. रिहल पर या किसी ऊँची जगह रखकर अदब से खोलते हैं।
4. पहले 'अऊ़ज़ू बिल्लाहि मिनशशैतानिर-रजीम' पढ़ते हैं, ताकि शैत हमारे इस नेक काम में रुकावट न डाले।
5. इसके बाद 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' पढ़कर शुरू करते हैं।
6. बहुत ठहर-ठहर कर और साफ़-साफ़ पढ़ते हैं।
7. एक-एक हर्फ़, ज़ेर, ज़बर, पेश वग़ैरह ख़ूब देखकर पढ़ते हैं, ता ग़लत न होने पाए।

. ठहरने के लिए जो निशानात बने होते हैं, उनका पूरा लिहाज़ रखकर ठहरते हैं।

. पढ़ने के दौरान में हम इधर-उधर नहीं देखते, न किसी से बात करते हैं, दिल लगाकर पढ़ते हैं।

0. तिलावत ख़त्म करके क़ुरआन मजीद सलीक़े से जुज़दान में लपेटकर अदब से किसी ऊँची जगह रख देते हैं।

़ुरआन मजीद पढ़ने के क़ायदे

क़ुरआन मजीद के हुरूफ़ (अक्षर) तो हम पहले ही से पहचानते हैं। यहाँ म इन्हें एक बार फिर दोहरा लेते हैं। इन्हें दाईं ओर से बाईं ओर पढ़ते हैं :*

ض	ص	ش	س	ز	ر	ذ	د	خ	ح	ج	ث	ت	ب	ا
ज़	स	श	स	ज़	र	ज़	द	ख़	ह	ज	स	त	ब	अ
ی	ء	ھ	ہ	و	ن	م	ل	ک	ق	ف	غ	ع	ظ	ط
य	अ	ह	ह	व	न	म	ल	क	क़	फ़	ग़	अ़	ज़	त

़बर (◌َ), ज़ेर (◌ِ), पेश (◌ُ), जज़्म (◌ْ), तशदीद (◌ّ) वग़ैरह लग जाने हर्फ़ों की आवाज़ पर जो असर पड़ता है, वह भी हम ख़ूब जानते हैं :

ाबर ◌َ: فَرَضَ شَجَرَ دَرَجَ دَرَسَ اَدَبَ

अ-द-ब द-र-स द-र-ज श-ज-र फ़-र-ज़

---

* **शिक्षक के लिए निर्देश :** जहाँ मुसलसल अरबी इबारतें हों, वहाँ छात्र-छात्राओं ो निर्देश दें कि वे उन्हें दाईं ओर से बाईं ओर पढ़ें और यह भी बताएँ कि अरबी हुरूफ़ ौर इबारतें दाईं ओर से बाईं ओर पढ़ी जाती हैं।

ज़ेर ـِ : اِبِلِ نِ مِ لِ كِ سِ جِ تِ بِ

बि ति जि सि कि लि मि नि इबिलि

पेश ـُ : فُعُلُ عُمُرُ رُسُلُ صُحُفُ كُتُبُ

कुतुबु सुहुफ़ु रुसुलु उमुरु फ़ुउलु

जज़्म ـْ : هُدْ هُدْ فَضْلُ رُكْ دِنْ دَسْ

दस् दिन् रुक् फ़ज़्लु हुद् हुद्

तशदीद ـّ : سَبِّحْ اِنَّ صَلِّ حَقُّ رَبُّ

रब्बु हक़्क़ु सल्लि इन-न सब्बिह

मिले-जुले एराब : رَحْمَتْ نَبِيْ مُحَمَّدْ اَحْمَدْ حَضْرَتْ

हज़रत् अहमद् मुहम्मद् नबी रह्मत्

लेकिन अभी कई क़ायदे और हैं, जिनको याद रखना बहुत ज़रूरी है वरना तिलावत हो ही नहीं सकती। वे क़ायदे ये हैं :

1. तनवीन : दो ज़बर ـً, दो ज़ेर ـٍ, दो पेश ـٌ

➢ जिस हर्फ़ पर दो ज़बर ـً हों, उसकी आवाज़ ऐसी निकलती है, जै उस हर्फ़ पर एक ज़बर लगाकर نْ से मिला दिया गया हो। जैसे

بً	جً	دً	مً
بَنْ	جَنْ	دَنْ	مَنْ
बन्	जन्	दन्	मन्

➢ जिस हर्फ़ पर दो ज़ेर ٍ हों, उसकी आवाज़ ऐसी निकलती है, जैसे उस हर्फ़ पर एक ज़ेर लगाकर نْ से मिला दिया गया हो। जैसे:

بٍ	جٍ	دٍ	مٍ
بِنْ	جِنْ	دِنْ	مِنْ
बिन्	जिन्	दिन्	मिन्

➢ जिस हर्फ़ पर दो पेश ٌ हों, उसकी आवाज़ ऐसी निकलती है, जैसे उस हर्फ़ पर एक पेश लगाकर نْ से मिला दिया गया हो। जैसे :

بٌ	جٌ	دٌ	مٌ
بُنْ	جُنْ	دُنْ	مُنْ
बुन्	जुन्	दुन्	मुन्

मेले-जुले एराब : وَرَقٍ قَلَمٌ رَحْمَةً كُتُبٌ جَسَداً

व-र-क़िन् क़-ल-मुन् रह्मतन् कुतुबुन् ज-स-दन्

2. **खड़ा ज़बर** ٰ : यह जिस हर्फ़ पर लगता है, उसकी आवाज़ ऐसी निकलती है, जैसे उस हर्फ़ पर एक ज़बर लगाकर ا से मिला दिया गया हो। जैसे :

بٰ	لٰ	جٰ	سٰ
بَا	لَا	جَا	سَا
बा	ला	जा	सा

➢ **खड़ा ज़ेर** ॱ : यह जिस हर्फ़ पर लगता है, उसकी आवाज़ ऐर निकलती है, जैसे उस हर्फ़ पर ज़ेर लगाकर یٰ से मिला दिया गया हो जैसे :

بٖ	جٖ	سٖ	دٖ
بِی	جِی	سِی	دِی
बी	**जी**	**सी**	**दी**

➢ **उल्टा पेश** ٗ : यह जिस हर्फ़ पर लगता है, उसकी आवाज़ ऐर निकलती है, जैसे उस हर्फ़ पर पेश लगाकर وٗ से मिला दिया गया हो जैसे :

بٗ	جٗ	سٗ	لٗ
بُوْ	جُوْ	سُوْ	لُوْ
बू	**जू**	**सू**	**लू**

मिले-जुले एराब : لَهٗ بِهٖ اٰدَمُ رَبَّهٗ اِسْمِهٖ لِكِ

लहू बिही आदमु रब्बहू इस्मिही मालि

3. **ख़ाली हर्फ़** : क़ुरआन मजीद में कुछ हुरूफ़ ज़रूर लिखे जाते लेकिन उनपर ज़ेर, ज़बर, पेश वग़ैरह नहीं होते और वे पढ़े भी नहीं जाते जैसे :

زَكوٰةٌ — بِالْهُدٰى — اُولٰٓئِكَ

زَكَاتٌ — بِلْهُدَا — اُلاَئِكَ

ज़कातुन — बिलहुदा — उलाइ-क

4. मद्द का पढ़ना : मद्द के मानी खींचना या लम्बा करना है। मद्दें दो ़ की होती हैं :

छोटी मद्द ~ : यह जिस हर्फ़ पर लगती है, उसे दो अलिफ़ के बराबर ा जाता है। जैसे :

اِلٰٓ اَهْلِهٖ — وَمَآاُنْزِلَ — اٰلَ فِرْعَوْنَ — اَغْرَقْنَآ

इलाऽअहलिही — वमाऽउन्ज़ि-ल — आ लि-फ़िरऔ-न — अग़रक़नाऽ

बड़ी मद्द : ~ जिस हर्फ़ पर लगती है, उसे तीन अलिफ़ के बराबर ा खींचा जाता है। जैसे :

حَدَآئِقَ — اَلْحَآقَّةُ — فَجَزَآؤُهٗ — كَآفَّةً

हदाऽऽइ-क़ — अल्हाऽऽक़्क़तु — फ़-ज-ज़ाऽऽउहू — काऽऽफ़्फ़तन

5. इदग़ाम (اِدْغَامْ) : यानी किसी हर्फ़ को किसी दूसरे हर्फ़ से ाना। अगर एक हर्फ़ पर ज़बर, ज़ेर, पेश हो और उसके बाद दो हर्फ़ आएँ कि एक पर जज़्म और दूसरे पर तशदीद हो तो जज़्मवाले हर्फ़ छोड़कर पहले हर्फ़ को तशदीदवाले हर्फ़ से मिलाते हैं। जैसे :

كِدْتُّ	لُقْكُّ	مِنْ رَّ
كِتُّ	لُكُّ	مِرَّ
कित-तु	लुक्कु	मिर-र

لَقَدْ كِدْتَّ　نَخْلُقْكُمْ　مِنْ رَّسُوْلٍ　رَاوَدْتُّه‘

लक़द कित-त　नख़लुक़्कुम　मिर्रसूलिन　रावत्तुहू

6. नून क़ुतनी (نُوْنُ قُطْنِیْ): क़ुरआन मजीद में कहीं-कहीं अ ख़ाली या अलिफ़ लाम ख़ाली से पहले नन्हा-सा ن लिखा होता है, जि हमेशा ज़ेर लगा रहता है। यह नून क़ुतनी कहलाता है। इसे बाद के या तशदीदवाले हर्फ़ से मिला देते हैं। जैसे :

نُوْحُ نِ ابْنَه‘	شِيْبَا نِ السَّمَاءُ
نُوْحُ نِبْنَه‘	شِيْبَ نِسَّمَاءُ
नूहुनिब्नहू	**शी-ब-निस्समाउ**

7. छोटी मीम (م): नून साकिन या तनवीन के बाद अगर बे (हो तो बे (ب) से पहले छोटी-सी मीम (م) लिखी होती है। यहाँ नून तनवीन की जगह मीम (م) ही की आवाज़ निकालनी चाहिए। जैसे

اَنْبِيَاءَ	مِنْ بَعْدِ	اَبَدً بِمَا
اَمْبِيَاءَ	مِمْبَعْدِ	اَبَدَمْبِمَا
अम्बिया-अ	**मिम-बअ़दि**	**अ-ब-दम् बिमा**

8. हुरूफ़े-मुक़त्तआत् (حُرُوْفِ مُقَطَّعَات) : अलग-अलग पढ़े जानेवाले

फ़ : क़ुरआन मजीद में कुछ सूरतों के शुरू में कुछ ऐसे हुरूफ़ लिखे रहते जो मिलाकर नहीं बल्कि अलग-अलग पढ़े जाते हैं। इन्हीं को हुरूफ़े-त्तआत कहते हैं। जैसे :

طٰهٰ	يٰسٓ	طٰسٓمٓ	نٓ	قٓ	صٓ
(طَاهَا)	(يَاسِيْنَ)	(طَاسِيْنَ)	(نُوْنَ)	(قَافَ)	(صَادَ)
ता-हा	**या-सीन**	**ता-सीन**	**नून**	**क़ाफ़**	**सॉद**

طٰسٓمٓ	عٓسٓقٓ	الٓرٰ	الٓمٓ	حٰمٓ
(طَاسِيْنَمِيْمَ)	(عَيْنَ سِيْنَ قَافَ)	(اَلِفْ لَامْ رَا)	(اَلِفْ لَامْ مِيْمَ)	(حَامِيْمَ)
सीन-मीम	**ऐन-सीन-क़ाफ़**	**अलिफ़-लाम-रा**	**अलिफ़-लाम-मीम**	**हा॰मीम॰**

كٓهٰيٰعٓصٓ	الٓمٓرٰ	الٓمٓصٓ
(كَافْ هَايَا عَيْنْ صَادْ)	(اَلِفْ لَامْ مِيْمْ رَا)	(اَلِفْ لَامْ مِيْمْ صَادْ)
फ़-हा-या-ऐन-सॉद	**अलिफ़-लाम-मीम-रा**	**अलिफ़-लाम-मीम-सॉद**

9. वक़्फ़ (وَقْفْ **ठहराव**) : क़ुरआन मजीद में जगह-जगह ठहरने के ानात बने होते हैं। इन जगहों पर ठहरना ज़रूरी है। निशानात ये

ج م ط O

➢ जिस हर्फ़ के बाद इनमें से कोई निशान आए उस हर्फ़ को साकिन
कर उससे पहलेवाले हर्फ़ से मिला देना चाहिए।

خُلِقَ ۝	اُفِكَ ؕ	وَقَبَ ؕ	ذِكْرَكَ ۝	فِيْهِ ۚ
خُلِقْ	اُفِكْ	وَقَبْ	ذِكْرَكْ	فِيْهْ
ख़ुलि	उफ़िक्	व-क़ब्	ज़िक्-रक्	फ़ीह्

مَرْضِيَّةً ؕ	بَيِّنَةٌ ۚ	خَاشِعَةٌ ۝
مَرْضِيَّهْ	بَيِّنَهْ	خَاشِعَهْ
मर-ज़िय्यह्	बय्यिनह्	ख़ाशिअ़ह्

➢ अगर ठहराव के निशान से पहले अलिफ़ या य (ی) ख़ाली और उ
पहले हर्फ़ पर दो ज़बर हों तो एक ही ज़बर पढ़ा जाता है। जैसे

رَحِيْمًا ۝	وَلَدًا ؕ	ضُحًى ۙ	مُصَلًّى ؕ
رَحِيْمَا	وَلَدَا	ضُحَا	مُصَلَّا
रहीमा	व-लदा	ज़ुहा	मुसल्-ला

➢ अगर वह हर्फ़ जिसके बाद इनमें से कोई निशान आए, पहले ही
साकिन हो तो किसी तबदीली की ज़रूरत नहीं :

فَحَدِّثْ ۝	لِذِكْرِىْ ؕ	زَكَرِيَّا ۝	مَاهِيَةٌ ؕ
फ़हद्दिस	लिज़िकरी	ज़क़रिय्या	माहिया

➢ अगर ○ पर ला لا बना हो, जैसे ○ तो वहाँ ठहरना, न ठहरना दोनों जाइज़ हैं।

10. कुछ और निशानात :

ق ص صلے قف لا

لا जहाँ ला लिखा हो वहाँ नहीं ठहरना चाहिए।

قف जहाँ यह निशान हो वहाँ ठहरना बेहतर है।

صلے यहाँ ठहरने की जगह आगे से मिलाना बेहतर है।

ص जहाँ यह निशान हो वहाँ ठहर सकते हैं।

ز इस निशान पर भी ठहरने की इजाज़त है।

ق यहाँ कुछ लोगों के नज़दीक ठहरना चाहिए, कुछ के नज़दीक नहीं।

कुरआन पढ़ने के ये सब क़ायदे हमने ख़ूब याद कर लिए हैं। अब रवानी से तिलावत करने लगेंगे। इंशाअल्लाह!

अभ्यास

(क) उत्तर दो :

1. क़ुरआन मजीद पढ़ना हो तो आप क्या करते हैं?
2. क़ुरआन पढ़ते समय किन बातों का ख़्याल रखना चाहिए?
3. तनवीन किस-किस तरह लिखी जाती है?
4. इदग़ाम किसे कहते हैं?
5. नून क़ुतनी को किस तरह पढ़ना चाहिए?
6. हुरूफ़े-मुक़त्तआ़त किन अक्षरों को कहते हैं। एक उदाहरण दो।
7. क़ुरआन में आयत के बीच 'ला' लिखा हो तो आप क्या करेंगे?
8. ठहराव के निशान से पहले 'अलिफ़' या 'ये' ख़ाली और उससे पह अक्षर पर दो ज़बर हों तो किस तरह पढ़ना चाहिए? दोनों का एक-ए उदाहरण दो।
9. ठहराव का निशान हो तो आख़िरी हर्फ़ (अक्षर) किस तरह पढ़ पड़ेगा?
10. ला (لا), क़ाफ़ फ़े (قف), सॉद् लाम ये (صلے), सॉद (ص ज़े (ز) और क़ाफ़ (ق) किसकी अ़लामतें हैं। ये अ़लामतें अग क़ुरआन में आएँ तो क्या करना चाहिए?

) जोड़े लगाओ :

	(अ)	(ब)
(1)	ज़बर	ـُ
(2)	जज़्म	ـّ
(3)	तशदीद	ـَ
(4)	तनवीन	ـٰ
(5)	खड़ा ज़बर	ـً
(6)	नून क़ुतनी	نوحُ نِ ابْنَهٗ (नूहु निब्नहू)

नीचे जो ख़ाने बने हुए हैं उनमें चार बार 'क़ुरआन मजीद' शब्द आए हैं, इन्हें ढूँढकर निकालो :

ल	क	ह	स	क	ज	र	क़ू	ब
क	क़ु	क़ु	श	द	अ	र	क़ु	स
स	ज़	र	स	जी	आ	न	र	क़ु
फ़	अ	ज़	आ	म	ह	त	आ	ज़
ह	त	ल	व	न	स	ख़	न	ज़
न	व	ज़	ह	आ	म	ज़	म	ग़
ह	त	स	ज़	र	अ	जी	जी	अ
ह	ल	ब	ग़	क़ु	त	क	द	ह
क़ु	र	आ	न	म	जी	द	अ	व

कुछ और काम

आन मजीद पढ़ने के तमाम क़ायदों को अच्छी तरह याद करके इसी तरह पढ़ा
।

25

नमाज़ के अज़कार और दुआएँ

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

तकबीरे-तहरीमा

اَللّٰہُ اَکۡبَرُ

सना

سُبۡحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمۡدِکَ وَتَبَارَکَ اسۡمُکَ
وَتَعَالٰی جَدُّکَ وَلَآ اِلٰہَ غَیۡرُکَ

सना में कुछ लोग यह पढ़ते हैं :

اَللّٰھُمَّ بَاعِدۡ بَیۡنِیۡ وَبَیۡنَ خَطَایَایَ کَمَا بَاعَدۡتَّ بَیۡنَ
الۡمَشۡرِقِ وَالۡمَغۡرِبِ ط اَللّٰھُمَّ نَقِّنِیۡ مِنَ الۡخَطَایَایَ
کَمَا یُنَقَّی الثَّوۡبُ الۡاَبۡیَضُ مِنَ الدَّنَسِ ط اَللّٰھُمَّ
اغۡسِلۡنِیۡ مِنۡ خَطَایَایَ بِالۡمَاءِ وَالثَّلۡجِ وَالۡبَرَدِ ○

अव्वुज़ :

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

समिया :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

रा फ़ातिहा :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ۙ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۙ
اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۙ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ صِرَاطَ
الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝ اٰمِيْن

रा इख़लास :

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ لَمْ يَلِدْ ۙ
وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

कूअ़ की तसबीह

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ

सुमीअ :

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ

तहमीद :

رَبَّنَا لَکَ الْحَمْدُ

कुछ लोग इसके बाद

حَمْداً کَثِیراً طَیِّباً مُّبَارَکاً فِیْهِ भी पढ़ते हैं।

सजदे की तसबीह :

سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی

कुछ लोग यह दुआ दोनों सजदों के बीच पढ़ते हैं :

رَبِّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَعَافِنِیْ وَاهْدِنِیْ وَارْزُقْنِیْ

तशह्हुद :

اَلتَّحِیَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّیِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ اَیُّهَا النَّبِیُّ
وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَکَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَیْنَا وَعَلٰی عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِیْنَ
اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

दुरूद शरीफ़ :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا صَلَّیْتَ
عَلٰی اِبْرَاهِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرَاهِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ
اَللّٰهُمَّ بَارِکْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا بَارَکْتَ
عَلٰی اِبْرَاهِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرَاهِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ

रूद शरीफ़ के बाद की दुआ :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ ظُلْمًا كَثِیْرًاوَّ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ
اِلَّآ اَنْتَ فَاغْفِرْلِیْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِیْٓ اِنَّكَ
اَنْتَ الْغَفُوْرُالرَّحِیْمُ ۝

लाम : اَلسَّلَامُ عَلَیْكُمْ وَرَحْمَةُاللّٰهِ

आए क़ुनूत :

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِیْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَیْكَ
وَنُثْنِیْ عَلَیْكَ الْخَیْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَانَكْفُرُكَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ
مَنْ یَّفْجُرُكَ اَللّٰهُمَّ اِیَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّیْ وَنَسْجُدُ وَاِلَیْكَ نَسْعٰی
وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْارَحْمَتَكَ وَنَخْشٰی عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِمُلْحِقٌ ۔

छ लोग यह दुआए-क़ुनूत पढ़ते हैं :

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِیْ فِیْ مَنْ هَدَیْتَ ط وَعَافِنِیْ فِیْ مَنْ عَافَیْتَ وَتَوَلَّنِیْ فِیْ مَنْ
تَوَلَّیْتَ ط وَبَارِكْ لِیْ فِیْ مَآ اَعْطَیْتَ وَقِنِیْ شَرَّمَاقَضَیْتَ ط فَاِنَّكَ
تَقْضِیْ وَلَا یُقْضٰی عَلَیْكَ اِنَّهٗ لَایَذِلُّ مَنْ وَّالَیْتَ ط وَلَایَعِزُّ مَنْ
عَادَیْتَ ط تَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَیْتَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنَتُوْبُ اِلَیْكَ.

नमाज़ के बाद की दुआ :

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَاذَالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

अज़ान के बाद की दुआ :

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِالتَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَآئِمَةِ اٰتِ مُحَمَّدَنِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَنِ الَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ.

अभ्यास

(क) उत्तर दो :

1. नमाज़ शुरू करते समय कानों तक दोनों हाथ उठाकर क्या कहते हैं?
2. तस्मीअ़ सुनने के बाद रुकूअ़ से उठकर क्या कहा जाता है?
3. सजदे की तसबीह क्या है? उसे एक सजदे में कम से कम कितनी बा पढ़ते हैं?
4. तशह्हुद कब पढ़ते हैं?
5. सलाम फेरने से पहले क्या पढ़ना चाहिए? सुनाओ।
6. अज़ान के बाद की दुआ सुनाओ।

(ख) जोड़े लगाओ :

1.	तकबीर	रब्बना ल-कल हम्द	رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ
2.	तअ़व्वुज़	बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम	بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
3.	तहमीद	अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस्सलवातु वत्तैयिबात	اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّيِّبَاتُ
4.	तशह्हुद	अल्लाहु अकबर	اَللّٰهُ اَكْبَرُ
5.	तसमिया	अऊज़ु बिल्लाहि मिनश-शैतानिर-रजीम	اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

ख़ाली जगहों को भरें :

1. .....रब्बिल आल-लमीन.....
.....रहीम.....
.....
.....
.....
.....वलज़्ज़ाल्लीन।

2. कुल हुवल्लाहु अहद.....
.....
.....
.....कुफ़ुवन अहद।

3. अल्लाहुम-म इन्ना नस्तईनु-क.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....इन-न अज़ाब-क बिल कुफ़्फ़ारि मुलहिक।

4. अत्तहिय्यातु लिल्लाहि.....
.....
.....
.....
.....अब्दुहू व रसूलुहू।

26

दुआ

लब पे आती है दुआ बनके तमन्ना मेरी।
ज़िन्दगी शमअ़ की सूरत हो, ख़ुदाया मेरी।।

दूर दुनिया का मिरे दम से अंधेरा हो जा
हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाए

ज़िन्दगी हो मिरी परवाने की सूरत या रब!
इल्म की शमअ़ से हो मुझको मुहब्बत या रब!!

हो मिरा काम ग़रीबों की हिमायत करन
दर्दमन्दों से, ज़ईफ़ों से मुहब्बत करन

मेरे अल्लाह! बुराई से बचाना मुझको।
नेक जो राह हो उस रह पे चलाना मुझको।।

—अल्लामा इक़

—: समाप्त :—